हिंदी बालभारती

सातवीं कक्षा

शासन निर्णय क्रमांक : अभ्यास–२११६/(प्र.क्र.४३/१६) एसडी–४ दिनांक २५.४.२०१६ के अनुसार समन्वय समिति का गठन किया गया । दि. ३.३.२०१७ को हुई इस समिति की बैठक में यह पाठ्‌यपुस्तक निर्धारित करने हेतु मान्यता प्रदान की गई ।

हिंदी

बालभारती

सातवीं कक्षा

मेरा नाम ______________________ है ।

महाराष्ट्र राज्य पाठ्‌यपुस्तक निर्मिती व अभ्यासक्रम संशोधन मंडळ, पुणे

संलग्न 'क्यू आर कोड' तथा इस पुस्तक में अन्य स्थानों पर दिए गए 'क्यू आर कोड' स्मार्ट फोन का प्रयोग कर स्कैन कर सकते हैं । स्कैन करने के उपरांत आपको इस पाठ्‌यपुस्तक के अध्ययन-अध्यापन के लिए उपयुक्त लिंक/लिंक्स (URL) प्राप्त होंगी ।

प्रथमावृत्ति : २०१७

© महाराष्ट्र राज्य पाठ्यपुस्तक निर्मिती व अभ्यासक्रम संशोधन मंडळ, पुणे - ४११००४
इस पुस्तक का सर्वाधिकार महाराष्ट्र राज्य पाठ्यपुस्तक निर्मिती व अभ्यासक्रम संशोधन मंडळ के अधीन सुरक्षित है। इस पुस्तक का कोई भी भाग महाराष्ट्र राज्य पाठ्यपुस्तक निर्मिती व अभ्यासक्रम संशोधन मंडळ के संचालक की लिखित अनुमति के बिना प्रकाशित नहीं किया जा सकता।

हिंदी भाषा समिति

डॉ.हेमचंद्र वैद्य - अध्यक्ष
डॉ.छाया पाटील - सदस्य
प्रा.मैनोद्दीन मुल्ला - सदस्य
डॉ.दयानंद तिवारी - सदस्य
श्री संतोष धोत्रे - सदस्य
डॉ.सुनिल कुलकर्णी - सदस्य
श्रीमती सीमा कांबळे - सदस्य
डॉ.अलका पोतदार - सदस्य - सचिव

हिंदी भाषा अभ्यासगट

श्री रामहित यादव
सौ. वृंदा कुलकर्णी
डॉ. वर्षा पुनवटकर
श्रीमती माया कोथळीकर
डॉ. आशा वी. मिश्रा
श्रीमती मीना एस. अग्रवाल
श्रीमती पूर्णिमा पांडेय
श्रीमती भारती श्रीवास्तव
श्री प्रकाश बोकील
श्री रामदास काटे
श्री सुधाकर गावंडे
डॉ.शैला चव्हाण
श्रीमती शारदा बियानी
श्री एन. आर. जेवे
श्रीमती गीता जोशी
श्रीमती अर्चना भुसकुटे
डॉ. रत्ना चौधरी
श्री सुमंत दळवी
डॉ. बंडोपंत पाटील
श्रीमती रंजना पिंगळे
श्रीमती रजनी म्हैसाळकर
श्रीमती निशा बाहेकर
डॉ. शोभा बेलखोडे
श्रीमती रचना कोलते
श्री रविंद्र बागव
श्री काकासाहेब वाळुंजकर
श्री सुभाष वाघ

प्रकाशक :

श्री विवेक उत्तम गोसावी
नियंत्रक
पाठ्यपुस्तक निर्मिती मंडळ
प्रभादेवी, मुंबई-२५

संयोजन :

डॉ.अलका पोतदार, विशेषाधिकारी हिंदी भाषा, पाठ्यपुस्तक मंडळ, पुणे
सौ. संध्या विनय उपासनी, विषय सहायक हिंदी भाषा, पाठ्यपुस्तक मंडळ, पुणे

मुखपृष्ठ : आभा भागवत
चित्रांकन : राजेश लवळेकर, मयूरा डफळ

निर्मिति :

श्री सच्चितानंद आफळे, मुख्य निर्मिति अधिकारी
श्री सचिन मेहता, निर्मिति अधिकारी
श्री नितीन वाणी, सहायक निर्मिति अधिकारी

अक्षरांकन : भाषा विभाग,पाठ्यपुस्तक मंडळ, पुणे
कागज : ७० जीएसएम, क्रीमवोव
मुद्रणादेश : N/PB/2017-18/40,000
मुद्रक : M/S. ELEGANT OFFSET PRINTERS PVT. LTD., KOLHAPUR

भारत का संविधान

उद्देशिका

हम, भारत के लोग, भारत को एक **संपूर्ण प्रभुत्व-संपन्न समाजवादी पंथनिरपेक्ष लोकतंत्रात्मक गणराज्य** बनाने के लिए, तथा उसके समस्त नागरिकों को :

सामाजिक, आर्थिक और राजनैतिक **न्याय,**

विचार, अभिव्यक्ति, विश्वास, धर्म

और उपासना की **स्वतंत्रता,**

प्रतिष्ठा और अवसर की **समता**

प्राप्त कराने के लिए,

तथा उन सब में

व्यक्ति की गरिमा और राष्ट्र की एकता

और अखंडता सुनिश्चित करने वाली **बंधुता**

बढ़ाने के लिए

दृढ़संकल्प होकर **अपनी इस संविधान सभा में** आज तारीख 26 नवंबर, 1949 ई. (मिति मार्गशीर्ष शुक्ला सप्तमी, संवत् दो हजार छह विक्रमी) **को एतद् द्वारा इस संविधान को अंगीकृत, अधिनियमित और आत्मार्पित करते हैं ।**

राष्ट्रगीत

जनगणमन – अधिनायक जय हे
भारत – भाग्यविधाता ।
पंजाब, सिंधु, गुजरात, मराठा,
द्राविड, उत्कल, बंग,
विंध्य, हिमाचल, यमुना, गंगा,
उच्छल जलधितरंग,
तव शुभ नामे जागे, तव शुभ आशिस मागे,
गाहे तव जयगाथा,
जनगण मंगलदायक जय हे,
भारत – भाग्यविधाता ।
जय हे, जय हे, जय हे,
जय जय जय, जय हे ।।

प्रतिज्ञा

भारत मेरा देश है । सभी भारतीय मेरे भाई–बहन हैं ।

मुझे अपने देश से प्यार है । अपने देश की समृद्ध तथा विविधताओं से विभूषित परंपराओं पर मुझे गर्व है ।

मैं हमेशा प्रयत्न करूँगा/करूँगी कि उन परंपराओं का सफल अनुयायी बनने की क्षमता मुझे प्राप्त हो ।

मैं अपने माता–पिता, गुरुजनों और बड़ों का सम्मान करूँगा/करूँगी और हर एक से सौजन्यपूर्ण व्यवहार करूँगा/करूँगी ।

मैं प्रतिज्ञा करता/करती हूँ कि मैं अपने देश और अपने देशवासियों के प्रति निष्ठा रखूँगा/रखूँगी । उनकी भलाई और समृद्धि में ही मेरा सुख निहित है ।

प्रस्तावना

प्रिय विद्‌यार्थियो,

तुम सभी छठी कक्षा की हिंदी बालभारती पाठ्‌यपुस्तक से पूर्व परिचित हो । अब सातवीं हिंदी बालभारती पाठ्‌यपुस्तक के लिए उत्सुक होंगे । तुम्हारी इस व्यग्रता को ध्यान में रखते हुए अनेक विविधताओं से सुसज्जित यह पुस्तक तुम्हारे सजग हाथों में सौंपते हुए अतीव हर्ष हो रहा है ।

हम इस बात से अनभिज्ञ नहीं हैं कि तुम्हें कविता, गीत, गजल सुनना बहुत प्रिय है । हम यह भी जानते हैं कि सबको कहानियों के विश्व में विचरण करना पसंद है । तुम्हारी इन इच्छाओं को इस पाठ्‌यपुस्तक में बहुत ही मनोरंजक ढंग से समाहित किया गया है । पुस्तक में चयनित निबंध, रेखाचित्र, साक्षात्कार और पत्र जैसी विधाएँ तुम्हारे ज्ञान अर्जन एवं वर्धन के लिए उपयोगी हैं । प्रयोगधर्मी विद्‌यार्थियों को पुस्तक में आए सभी संवाद, एकांकी, हास्य-व्यंग्य, विविध उपक्रम, प्रकल्प आदि श्रवण, भाषण-संभाषण, वाचन, लेखन तुम्हारी इन सभी क्षमताओं को विकसित करने में पूर्णतः सक्षम होंगे ।

डिजिटल दुनिया की नव-नवीन पद्‌धतियाँ, नई सोच, नीर-क्षीर विवेकी दृष्टिकोण तथा पठन-पाठन के दृढ़ीकरण एवं अभ्यास हेतु 'मैंने क्या समझा', 'सदैव ध्यान में रखो', 'जरा सोचो तो' आदि विविध कृतियों, गतिविधियों से पाठ्‌यपुस्तक को सुसज्जित किया गया है । तुम्हारी सर्जनशीलता एवं अपेक्षाओं को ध्यान में रखते हुए अनेक स्वयं अध्ययन के अवसर भी प्रदान किए गए हैं । अपेक्षित भाषाई प्रवीणता के लिए 'भाषा अध्ययन', 'अध्ययन कौशल', 'विचार मंथन', 'मेरी कलम से', 'वाचन जगत से' आदि को अधिक व्यापक और रोचक बनाया गया है ।

लक्ष्य की प्राप्ति मार्गदर्शक एवं सुविधादाता के बिना पूरी नहीं हो सकती । अतः अपेक्षित भाषिक प्रवीणता तथा उद्‌देश्य की पूर्ति हेतु अभिभावकों एवं गुरुजनों का सहयोग तथा मार्गदर्शन तुम्हारे कार्य को आसान, सुकर और सफल बनाने में सहायक ही सिद्‌ध होंगे । आशा ही नहीं पूर्ण विश्वास है कि तुम इस पाठ्‌यपुस्तक का कुशलतापूर्वक उपयोग करते हुए हिंदी भाषा एवं विषय के प्रति विशेष अभिरुचि एवं आत्मीयता के साथ उत्साह प्रदर्शित करोगे ।

(डॉ. सुनिल मगर)
संचालक
महाराष्ट्र राज्य पाठ्‌यपुस्तक निर्मिती व
अभ्यासक्रम संशोधन मंडळ पुणे-०४

पुणे
दिनांक :- २८ मार्च २०१७ (गुढी पाडवा)

भाषा विषयक क्षमता

यह अपेक्षा हैं कि सातवीं कक्षा के अंत में विद्‌यार्थियों में भाषा विषयक निम्नलिखित क्षमताएँ विकसित हों ।

क्षेत्र	क्षमता
श्रवण	१. गीत, कथा, एकांकी, रिपोर्ताज, निवेदन, निर्देश, प्रश्न आदि को आकलन सहित सुनना और सुनाना । २. घटना, प्रसंग, भाषण, विभिन्न सामयिक विषयों के वर्णन इनके सहसंबंधों को पहचानते हुए सुनना । ३. व्यक्तिगत अनुभवों में निहित भावों, अनौपचारिक संभाषण, उद्‌घोषणा, साक्षात्कार ध्यानपूर्वक सुनना-सुनाना । ४. प्रसार माध्यमों एवं अन्य कार्यक्रमों को सुनकर उनके महत्त्वपूर्ण तथ्यों, विवरणों, प्रमुख मुद्‌दों आदि को पुनः याद करना/स्मरण करके सुनाना/दोहराना । ५. सुने हुए वाक्य, उससे संबंधित अन्य वाक्य, वाक्यांशों को अनुमान लगाकर सुनाना । ६. सुनी हुई बातों पर चिकित्सक विचार करना । (सत्य-असत्य, तार्किक-अतार्किक) ७. किसी प्रस्तुति के बारे में अपने निरीक्षण/अनुभव/पूर्वज्ञान के आधार पर सूचनाओं का सत्यापन करना ।
भाषण-संभाषण	१. विशेष वर्णयुक्त शब्दों का उचित उच्चारण करते हुए वार्तालाप, संभाषण, आशय, घटना, प्रसंग पर संवाद प्रस्तुति । २. नियत विषय, अपनी संवेदना, अनुभूति, भावना आदि को उपयुक्त ढंग से संप्रेषित करना । ३. विनम्र शब्दों में प्रश्न, निवेदन आदि से संबंधित वाक्यों की निर्मिति करके अभिव्यक्त करना । ४. प्रश्नों के उचित उत्तर देते समय दिशा निर्देश करते हुए किसी संदर्भ को अपने शब्दों में पुनः प्रस्तुत करना । ५. जोड़ी/गुट में कृति/उपक्रम के रूप में संवाद, प्रहसन, चुटकुले, नाटक में सहभागी होकर प्रभावपूर्ण प्रस्तुति करना । ६. औपचारिक अवसर पर संक्षिप्त भाषण तैयार करके वक्तव्य देना ।
वाचन	१. शुद्‌ध उच्चारण, उचित बलाघात,तान-अनुतान एवं गतिसहित मुखर एवं मौन वाचन करना । २. दिए गए आशय का शाब्दिक और अंतर्निहित अर्थ ग्रहण करते हुए वाचन करना । ३. संचार माध्यमों की सूचना, औपचारिक/ अनौपचारिक पत्र, आवेदन, प्रपत्र, व्यक्तिगत नोट, डायरी, निबंध, ब्लॉग आदि का आकलन सहित वाचन करना । ४. अभिव्यक्ति क्षमता द्‌वारा शब्द भंडार में वृद्‌धि करते हुए शब्दों के अर्थ, लिखित अभिव्यक्ति का पूर्व अनुमान लगाते हुए वाचन करना । ५. लिखित संदर्भ में अस्पष्टता, संयोजन की कमी, विसंगति, असमानता तथा अन्य दोषों की पहचान कर वाचन करना ।
लेखन	१. पठित-अपठित पाठ्‌यांश का मानक श्रुतलेखन एवं शुद्‌धलेखन करना । २. पाठ्‌य सामग्री का अपने शब्दों में सरल अर्थ एवं सारांश लेखन करना । ३. परिच्छेद का हिंदी से अंग्रेजी एवं अंग्रेजी से हिंदी में लिप्यंतरण एवं अन्य भाषाओं से हिंदी में अनुवाद करना । ४. दिए गए आशय, विषय से संबंधित प्रश्ननिर्मिति तथा उत्तर लेखन करना । ५. रूपरेखा एवं स्वयंस्फूर्त भाव से संवाद, पत्र, निबंध, वृत्तांत, घटना, विज्ञापन आदि का लेखन करना ।

अध्ययन कौशल	१. संदर्भ स्रोतों से प्राप्त जानकारी का संकलन एवं वर्गीकरण, मुद्दे, सारांश टिप्पणी तैयार करना । २. मौखिक/ लिखित सूचनाओं को आलेख रूप में परिवर्तित करना । जैसे- चार्ट, टेबल, आलेख, प्रवाही-तक्ता, वेब डिजाइन आदि । ३. दैनिक कार्य नियोजन एवं व्यवहार में प्रयोग तथा मुहावरे, कहावतें, नए शब्दों का संग्रह एवं प्रयोग करना । ४. द्‌विभाषी संदर्भ साहित्य, आलेख तैयार करना । ५. स्वयं के लिए आवश्यक जानकारी,आवश्यक चित्र, वीडियो क्लिप्स, फिल्म आदि अंतरजाल पर खोजना । ६. विविध स्वरूपों के डिजिटल साहित्य के प्रयोग की जानकारी रखना (ई-बुक्स, ऑडियो बुक्स, इंटरएक्टिव साहित्य, भाषिक खेल आदि) । ७. संकेत स्थलों की संरचना को समझते हुए उसमें निहित विविध संदर्भों का यथायोग्य उपयोग करना । ८. संगणकीय शिष्टाचार का पालन करना । जैसे : दूसरों का पासवर्ड, मेसेज न देखना ।
भाषा अध्ययन	१. पुनरावर्तन-अ से ऑ और क, च, ट, त, प वर्ग के आधार पर वर्णमाला, मात्रा, संयुक्ताक्षर, पंचमाक्षर आदि । २. समानार्थी विरुद्‌धार्थी, शब्दयुग्म, उपसर्ग, प्रत्यय, लिंग-वचन परिवर्तन और प्रयोग (वाक्यों के आधार पर), तत्सम, देशज, कृदंत,तद्‌धित, संधि परिचय । ३. पुनरावर्तन-विकारी शब्द-अविकारी शब्द- अव्यय (भेदसहित), काल पहचानना (भेदसहित), कारक परिचय, प्रयोग, वाक्य भेद (अर्थ के अनुसार), वाक्य उद्‌देश्य और विधेय । ४. अ. विरामचिह्न ( ), [ ], {},^ ब. शुद्‌ध उच्चारण प्रयोग (कोष-कोश-कोस) ५. अ. हिंदी-मराठी सम्मोचारित भिन्नार्थक शब्द ब. मुहावरे-कहावतें प्रयोग के माध्यम से परिचय ।

दो बातें, शिक्षकों के लिए ....

विद्‌यार्थियों को अध्ययन-अनुभव देने से पहले पाठ्‌यपुस्तक में दी गई सूचनाओं, अध्ययन संकेतों एवं दिशा-निर्देशों को अच्छी तरह आत्मसात कर लें । पाठ्‌यपुस्तक में दी गईं सभी कृतियों का विद्‌यार्थियों से अभ्यास करवाना आवश्यक है । अध्ययन-अध्यापन में चर्चा एवं प्रश्नोत्तर को अधिक महत्त्व प्रदान करना अपेक्षित है । डिजिटल अथवा इलेक्ट्रॉनिक संदर्भों (अंतरजाल, ऐप्स, संकेतस्थल आदि) में आपका सहयोग एवं मार्गदर्शन नितांत आवश्यक है । भाषा अध्ययन अभ्यास के लिए अधिक-से-अधिक संदर्भों तथा विविध उदाहरणों का उपयोग अपेक्षित है । व्याकरण का अध्यापन पारंपरिक रूप से नहीं करना है । विभिन्न उदाहरणों, प्रयोगों, कृतियों द्‌वारा विषय वस्तु की संकल्पना को स्पष्ट एवं दृढ़ीकरण किया जाना आवश्यक है ।

पूरक पठन सामग्री केवल पाठ को पोषित ही नहीं करती, अपितु विद्‌यार्थियों की पठन संस्कृति को बढ़ावा देती हुई उनमें अध्ययन के प्रति रुचि भी जागृत करती है । अतः पूरक पठन अनिवार्य एवं आवश्यक रूप से करवाएँ । अपने अध्यापन में इंटरएक्टिव सामग्री का प्रयोग करें ।

पाठ्‌यपुस्तक में दी गई सामग्री को दैनिक जीवन से जोड़ते हुए भाषा और स्वाध्यायों के सहसंबंधों को स्थापित किया गया है । आवश्यकतानुसार पाठ्‌येतर भाषिक गतिविधियों, कृतियों, खेलों, संदर्भों, प्रसंगों का भी समावेश अपेक्षित है । विद्‌यार्थियों में जीवन मूल्यों, जीवन कौशलों, मूलभूत तत्त्वों के विकास के अवसर भी प्रदान करें । क्षमता विधान एवं पाठ्‌यपुस्तक में अंतर्निहित सभी क्षमताओं/कौशलों, स्वाध्यायों का 'सतत सर्वंकष मूल्यमापन' भी अपेक्षित है ।

हमें पूर्ण विश्वास है कि उपरोक्त सूचनाओं का पालन करते हुए शिक्षक, अभिभावक, सर्वजन इस पुस्तक का सहर्ष स्वागत करेंगे ।

* अनुक्रमणिका *

पहली इकाई

क्र.	पाठ का नाम		पृष्ठ क्र.
१.	अभयारण्य	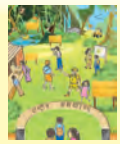	१
२.	गुनगुनाते रहो		२ –५
३.	मुक्ति का प्रतिदान		६–१०
४.	पहचानो तो !		११–१२
५.	चिड़िया की पाती		१३–१७
६.	हँसिकाएँ		१८
७.	बादलों की काव्य–सृष्टि		१९–२३
८.	चित्र बोलते हैं		२४–२७
९.	एक सैर ऐसी भी		२८–३१
१०.	(अ) दो गजलें		३२
	(ब) एक मटका बुद्‌धि		३३–३४
११.	प्रगति		३५–३९
१२.	जादुई अँगूठी	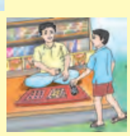	४०–४४
१३.	मेरे देश के लाल	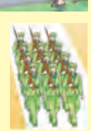	४५–४८
*	अभ्यास–१		४९
*	पुनरावर्तन –१		५०

दूसरी इकाई

क्र.	पाठ का नाम		पृष्ठ क्र.
१.	कृषि प्रयोगशाला		५१
२.	मधुऋतु		५२–५५
३.	काकी		५६–६०
४.	संदेश		६१–६४
५.	आलस का सुख		६५–६९
६.	अक्लमंदी		७०
७.	साक्षात्कार		७१–७५
८.	पद		७६–७९
९.	ऐसे उतारी आरती		८०–८३
१०.	दिव्यांग		८४
११.	रोजी और निक्की		८५–८९
१२.	स्कूल चलो		९०–९५
१३.	धन्यवाद		९६–९९
	* अभ्यास –२		१००
	* अभ्यास – ३ (चित्रकथा)	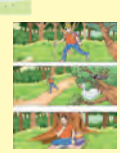	१०१–१०३
	* पुनरावर्तन –२		१०४

महाराष्ट्र की राज्य तितली 'ब्लू मॉरमॉन' मुखपृष्ठ पर पुस्तकरूपी फूल से मकरंद का रसास्वादन करती हुई दिखाई गई है । शीर्षकपृष्ठ पर यही तितली कीचड़ में बैठी हुई दिखाई गई है । तितलियाँ कीचड़ से भी क्षार ग्रहण करती हैं !

● देखो, पहचानो और चर्चा करो :

१. अभयारण्य

❑ **अध्यापन संकेत :** चित्र का निरीक्षण करवाएँ । चित्र में दिखाई देने वाली वस्तुओं, प्राणियों के बारे में प्रश्न पूछें । विद्यार्थियों से प्रश्नोत्तर के माध्यम से अभयारण्य की आवश्यकता और वन्य प्राणियों के संरक्षण पर चर्चा कराएँ ।

● सुनो, पढ़ो और गाओ :

२. गुनगुनाते रहो

– जगदीशचंद्र तिवारी

जन्म : २२ नवंबर १९५०, अजमेर (राजस्थान) **रचनाएँ :** हारा नहीं हूँ मैं, हो रही है अब सहर **परिचय :** जगदीशचंद्र तिवारी जी गीतों और गजलों के सशक्त हस्ताक्षर हैं । विविध पत्र-पत्रिकाओं में उनके मुक्तक, कविताएँ, गीत, गजल, दोहे आदि नियमित प्रकाशित होते रहते हैं ।

प्रस्तुत कविता में कवि ने निराशा के क्षणों में भी आशा के दीप जलाए रखने के लिए हम सबको प्रेरित किया है ।

सुनो तो जरा

किसी अन्य भाषा की प्रभाती सुनो और कक्षा में साभिनय सुनाओ ।

जब कभी आस की मन में बजे शहनाई तेरे
उस समय तू गीत सारे भोर के ही गुनगुनाना ।
मानता हूँ हर जगह पर
हर दिशा में है अँधेरा
और दीखे ही नहीं जब
नेह किरणों का बसेरा
नेह किरणों का यदि दीपक पड़े तुझको जलाना ।
उस समय तू गीत सारे भोर के ही गुनगुनाना ।।
नेह की ये गंध तेरी
राह की बाधा हरेगी
हर अँधेरी रात में ये
रोशनी फिर से भरेगी
गर अँधेरा छाए, दीप तू फिर से जलाना ।
उस समय तू गीत सारे भोर के ही गुनगुनाना ।।

❑ उचित हाव-भाव, लय-ताल के साथ कविता प्रस्तुत करें । विद्यार्थियों से साभिनय अनुकरण पाठ, सामूहिक, गुट में एवं एकल पाठ कराएँ । प्रश्नोत्तर एवं चर्चा के माध्यम से कविता के भाव स्पष्ट करें । कविता के मुख्य भाव के बारे में पूछें ।

अध्ययन कौशल

सुनी हुई किसी कविता का पुनःस्मरण करते हुए आशय पर आधारित टिप्पणी बनाओ :

- रचयिता
- कविता का विषय
- मूल भाव

अब समय के साथ में
साथी तुझे चलना पड़ेगा
जीत का परचम तुझे
हर हाल में गढ़ना पड़ेगा
हारने का जब हो डर तब अपने अंतस को जगाना ।
उस समय तू गीत सारे भोर के ही गुनगुनाना ।।
गीत में स्वर-लय का गुंजन
भी तुझे भरना पड़ेगा
और नव छंदों को भी
उसमें तुझे जड़ना पड़ेगा
गीत में संवेदनामय भावों को होगा गाना ।
उस समय तू गीत साथी दर्द के भी गुनगुनाना ।।

❑ वर्णमाला को क्रम से बुलवाएँ और विशेष वर्णों के उच्चारण पर ध्यान दें । कविता में से मात्रावाले शब्द खोजवाकर लिखवाएँ और उनका वाक्य में प्रयोग करवाएँ । कविता से दस शब्द खोजवाकर उनके समानार्थी शब्द लिखवाएँ ।

मैंने समझा

शब्द वाटिका

नए शब्द

आस = आशा
भोर = सुबह
नेह = स्नेह, प्रेम
बसेरा = निवास
परचम =झंडा, ध्वज
अंतस = अंतरात्मा/मन
गुंजन = आवाज, गूँज
दर्द = पीड़ा

विचार मंथन

।। मधुर वचन सौ क्रोध नसाई ।।

खोजबीन

भारतीय संविधान में उल्लेखित मौलिक अधिकार ज्ञात करो ।

इतिहास और नागरिक शास्त्र सातवीं कक्षा पृ. ७६

बताओ तो सही

निम्न शब्दों का प्रयोग कब करते हैं, बताओ । व्यवहार में इनका उपयोग करो :

- धन्यवाद
- कृपया
- क्षमा
- नमस्ते

वाचन जगत से

किसी सफल व्यक्ति की आत्मकथा का अंश पढ़ो और कक्षा में सुनाओ :

- परिचय
- प्रेरक प्रसंग
- सीख

मेरी कलम से

भोर होते ही होने वाले परिवर्तनों को अपने शब्दों में लिखो :

- अड़ोस-पड़ोस का वातावरण
- आकाश की स्थिति
- गृहिणियों के क्रियाकलाप
- बच्चों के व्यवहार

जरा सोचो ...... बताओ

तुम्हारे घर की वस्तुओं को वाणी होती तो ......

स्वयं अध्ययन

किसी अपठित पाठ्यांश का श्रुतलेखन एवं शुद्धलेखन करो, आपस में जाँचो ।

✻ **कविता के आधार पर भोर के गीत गुनगुनाने के अवसर लिखो :**

(क) .... । (ग) .... ।

(ख) .... । (घ) .... ।

सदैव ध्यान में रखो

दुख के बाद सुख आता है ।

भाषा की ओर

नीचे दिए गए शब्दों में से मूल शब्द, उपसर्ग एवं प्रत्यय अलग करके लिखो : **स्वदेशी, चिरकालीन, निरोगी, विस्मरणीय, असावधानी, अपमानित, सुसंस्कारित, विनम्रता, असफलता**

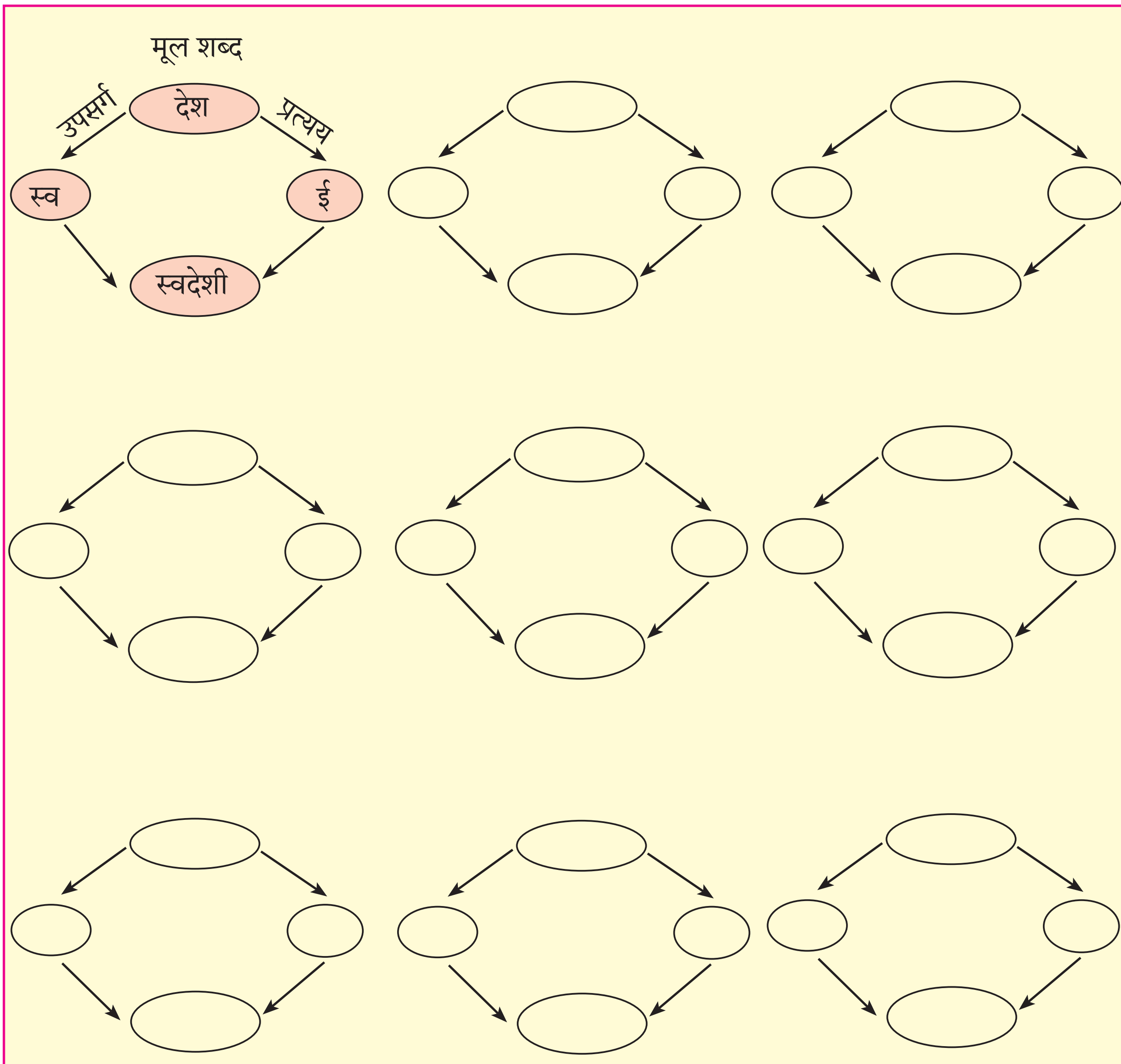

● सुनो, समझो और सुनाओ :

३. मुक्ति का प्रतिदान

इस कहानी के माध्यम से कहानीकार ने लालच से दूरी बनाए रखने एवं किए गए उपकार के बदले प्रत्युपकार को रेखांकित किया है ।

विचार मंथन

।। कृतज्ञ बनो, कृतघ्न नहीं ।।

विचार मंथन की कृति करवाने के लिए आवश्यक सोपान :

* विद्यार्थियों से कृतज्ञ और कृतघ्न शब्दों पर चर्चा करें । * उन्हें अपने अनुभव बताने के लिए कहें ।
* विद्यार्थियों से पूछें कि क्या उनपर किसी ने कोई उपकार किया है ? * यदि हाँ तो बदले में उन्होंने क्या किया ?
* कृतज्ञता एवं कृतघ्नता में से विद्यार्थी किसे अपनाना पसंद करेंगे बताने के लिए कहें । * इन बातों के क्या परिणाम हो सकते हैं, पूछें ।
* किन-किन के प्रति कृतज्ञ होना चाहिए । * उनकी सूची बनवाकर वर्गीकरण (घर के सदस्य, मित्र, प्राणी, पेड़ आदि) कराएँ ।

बहुत पहले की बात है । अचलपुर नामक एक गाँव था । वहाँ के लोग बड़े सीधे-सादे और ईमानदार थे । उन्हें किसी बात का लालच नहीं था । धन-दौलत, सोना -चाँदी, रुपये-पैसे का महत्त्व हर युग में ही रहा है । लोग इन्हें पाने और लूटने के लिए क्या-क्या अत्याचार नहीं करते ? उन्हीं दिनों दो व्यक्ति महात्मा ज्ञानी जी के पास सोने के सिक्कों से भरी एक थैली लेकर उपस्थित हुए । दोनों ही थैली से मुक्ति पाना चाहते थे ।

समस्या यह थी कि उन दोनों में से कोई भी उस धन को लेने के लिए तैयार नहीं था । उन दोनों ने अपने दामादों को सिक्कों से भरी वह थैली दान-दहेज में देना चाहा तो उन्होंने भी यह कहकर लेने से साफ मनाही की कि दहेज लेना बिलकुल अनुचित है । उन्होंने कहा, ''यह एक सामाजिक अपराध है । दहेज लेना और देना, दोनों ही गैरजरूरी और अमान्य हैं । कन्या एक रत्न है । उसके साथ दहेज लेने वाला अक्षम्य और कठोर दंड का भागीदार होता है। इसके अतिरिक्त दान उसे लेना चाहिए जिसको उसकी जरूरत हो अतः हम यह धन नहीं ले सकते ।''

अब ज्ञानी जी के सामने भी यह विकट समस्या थी । उन्होंने अपने शिष्यों को बुलाकर यही प्रश्न किया- ''यह चकाचौंध करने वाला धन किसको दिया जाए ?''

एक ने कहा, ''यह संपत्ति इस देश के राजा को सौंप दी जाए क्योंकि वही इस देश और धरती का स्वामी

❑ विद्यार्थियों से कहानी का मौनवाचन कराएँ । विद्यार्थियों से इस कहानी को अभिनय के साथ उनके शब्दों में सुनाने के लिए कहें । 'मुक्ति' और 'प्रतिदान' शब्दों पर चर्चा करें । उनसे कहानी में आई प्रमुख घटनाओं पर विचार प्रकट करने के लिए कहें ।

जरा सोचो .... लिखो

रुपये/सिक्के बोलने लगे तो ......

है । राजा के पास यह संपत्ति जाएगी तो वह अपने लिए थोड़े ही रख लेंगे । इस संपत्ति से समाज की भलाई का ही कोई काम करेंगे । यह संपत्ति राजा को देंगे तो वे हम पर खुश होकर हमारा सम्मान कर सकते हैं ।''

इसपर एक आगंतुक किसान मित्र ने यह कहकर विरोध किया, ''सिक्कों से भरी वह थैली जिस खेत से मिली है, वह मेरा था किंतु उस खेत को वास्तव में मेरा यह मित्र जोतता-बोता था । मेरा यह कहना है कि यह संपत्ति भी उसी को मिले । इस संपत्ति का असली हकदार वही है ।''

दूसरे ने विरोध प्रकट किया, ''अचानक मिली हुई यह दौलत मेरे खून और पसीने की कमाई नहीं है, यह मुफ्त की कमाई है । मुफ्त की कमाई फलदायी नहीं होती इसलिए मैं इसे स्वीकार करके ईश्वरीय न्याय और संपदा से विमुख नहीं होना चाहता ।''

ज्ञानी जी उन दोनों मित्रों के उदात्त विचारों से गदगद हो उठे । अब उनकी प्रश्नवाची दृष्टि अपने दूसरे शिष्य की ओर उठी । उसका उत्तर था, '' नीति तो यह कहती है कि जब एक वस्तु लेने वाला कोई न हो तो वह वस्तु किसी को दान कर दी जाए । यदि यह दान मुझे ही दे दिया जाता तो ...'' आगे की बात उस शिष्य के गले में ही अटक गई, वह गड़बड़ा गया क्योंकि ज्ञानी जी उसको घूरने लगे थे।

अब तीसरे शिष्य की बारी थी । उसका कहना था, ''इस दौलत को फिर उसी जमीन में गाड़ दिया जाए ।'' इस तरह कोई उस धन को लेने के लिए तैयार नहीं हो रहा था । ज्ञानी जी निराश हो गए फिर उन्हें एक आशा की किरण दिखाई दी । उनकी आँखों में चमक आ गई । उन्होंने प्रसन्न मुद्रा में अपने सबसे छोटे शिष्य से पूछा, ''यदि तुम मेरी जगह होते तो कैसा न्याय करते ?''

शिष्य का यह भोला-भाला उत्तर गुरु जी को पसंद आया, ''मेरी आत्मा कहती है कि धरती माँ ने यह दौलत किसी शुभ कार्य या लोकहित के लिए दी हैं । क्यों न इस विस्तृत भूखंड में ऐसा सदाबहार बाग लगाया जाए जिससे तमाम लोगों को फल, पंछियों को बसेरा और पथिकों को मुफ्त में छाया मिल सके ।''

उसके विचार सुनकर सबकी बाँछें खिल गईं । अस्तु, गुरु जी ने वह सारे सिक्के उसे सौंपकर उत्तम फलों के बीज खरीदने के लिए राजधानी की यात्रा का आदेश दे दिया । शिष्य ने अपने गुरु के आदेश को शिरोधार्य करके अपनी यात्रा का श्रीगणेश किया ।

वह लगातार चलता रहा । मन-ही-मन सुंदर बाग की कल्पना भी करता जा रहा था । कई दिनों की यात्रा करने के पश्चात जब वह होनहार शिष्य राजधानी के चौक-बाजार में सर्वोत्तम बीजों की तलाश में घूम रहा

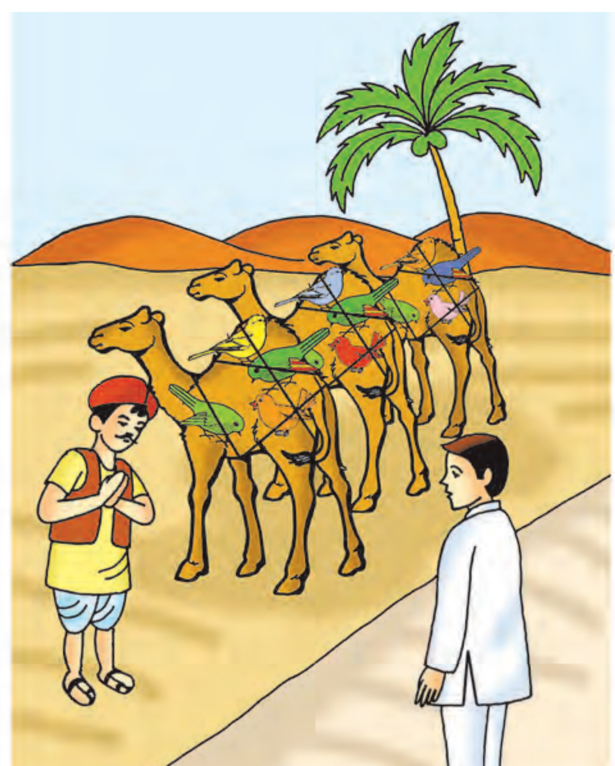

❑ विद्यार्थियों से कहानी में वर्णों को ढूँढ़कर श्यामपट पर लिखवाकर क्रम से बताने के लिए कहें । वर्ग के अनुसार वर्णमाला लिखवाएँ । विभिन्न प्रकार के दस वाक्य देकर उनके शब्दों का लिंग परिवर्तन करके वाक्य पुन: लिखने के लिए कहें ।

मेरी कलम से

निम्न शब्दों को लेकर एक कविता लिखो :

झरना | स्नेह | फूल | आकाश

था तो गुजरते हुए ऊँटों के एक काफिले का शोर उसने अचानक सुना । उसने देखा ऊँट पर एक व्यक्ति सवार था । देखने में वह मुखिया लग रहा था । उसके पास पिंजड़े में बंद पक्षी थे । उनमें घोर करुण चीत्कार उन घायल और मौत से जूझते, दम तोड़ते हुए पक्षियों का था, जिन्हें उस कारवाँ का मुखिया ऊँटों की पीठ पर जालों में फँसाकर खान साहब के महल की तरफ लिए जा रहा था । मौत से डरे, मरे-मरे-से पक्षी, मुक्ति के लिए छटपटा रहे थे ।

उस उदार हृदय युवक से वह करुण क्रंदन नहीं देखा गया तो उसने मुखिया से बात की । मुखिया को समझाया कि प्राणिमात्र पर दया करना सबसे बड़ा धर्म है । उसने कहा, ''इन निरीह पक्षियों को स्वतंत्र करके पुण्य की कमाई कर लें क्योंकि पुण्य ही सबसे बड़ा कर्म है ।'' उन निरीह पक्षियों को छोड़ देने का आग्रह सुनकर मुखिया हाथ जोड़कर बोला, ''खान साहब, इन चिड़ियों के बदले पाँच सौ नकद स्वर्ण मुद्राएँ देंगे । तुम्हारे पास क्या है जो मैं इन्हें छोड़ दूँ ?'' सभी प्राणियों का दर्द समझने वाले उस युवक ने सोने के सिक्कों से भरी हुई थैली का मुँह उस लालची मुखिया के आगे खोल दिया । उस सुनहली दौलत को देखकर मुखिया की आँखें फैल गईं । बात- बात में सारे पक्षी मुक्त कर दिए गए ।

अब वह शिष्य मन मारकर अपने गुरु के पास लौट रहा था । मुक्त हुए सभी पक्षी उसपर छाया करते और चहचहाते, गीत गाते-से चल रहे थे । फिर भी उस शिष्य के पैर यह सोचकर मानो जड़ होते जा रहे थे कि वह अपने गुरु को क्या उत्तर देगा ? क्या करने आया था और तैश में आकर क्या कर बैठा ? इसी सोच में वह अभागा मृत्यु की कामना करते-करते थककर सो गया ।

नींद में स्वप्न, स्वप्न में पक्षियों की मुक्त चहचहाहट के बीच उन पक्षियों की रंग-बिरंगी रानी उसके सीने पर फुदक-फुदककर जगा रही थीं, ''उठो, भोले-भाले, होनहार, दयालु साथी ! अपने सभी दुख भूल जाओ । हम सभी आजाद पक्षियों ने मिलकर पहले ही तुम्हारे उस विशाल भूखंड में तरह-तरह के फलों के बीज बो दिए हैं । आँखें खोलो और वहाँ जाकर देखो ।''

अब वह युवक जागकर उन मैदानों की ओर सरपट दौड़ने लगा । उसके आगे-पीछे और ऊपर तक न केवल पक्षियों की चहचहाहट-ही-चहचहाहट थी बल्कि वहाँ जाकर उसने यह भी देखा कि दुनियाभर के तमाम पक्षी अपनी चोंचों और पंजों से धरती खोद रहे हैं, शिष्यों के साथ कुछ लोग बीज बो रहे हैं, पौधे लगा रहे हैं।

उसके गुरु और अन्य एकत्रजन मुक्ति के इस प्रतिदान का करिश्मा देखकर फूले ही नहीं समा रहे थे बल्कि वे भी बागवानी में बढ़-चढ़कर हाथ बँटा रहे थे ।

❑ पाठ में आए शिष्य, रानी, भोला-भाला, ऊँट, मुखिया, बालक शब्दों का वाक्यों में प्रयोग कर लिखवाएँ । रास्ते में चलते समय यदि किसी विद्‌यार्थी को कोई मूल्यवान वस्तु, दस्तावेज आदि मिल जाए तो वह क्या करेगा, बताने के लिए कहें ।

मैंने समझा

स्वयं अध्ययन

किसी सुनी हुई कहानी का सारांश अपने शब्दों में लिखो ।

शब्द वाटिका

नए शब्द

प्रतिदान = बदले में दिया गया दान
महात्मा = सज्जन, सत्पुरुष
चकाचौंध = चमक-दमक
क्रंदन = विलाप
अभागा = बदनसीब
करिश्मा = चमत्कार

मुहावरे

गदगद होना = अत्यधिक खुश होना
बाँछें खिलना = खूब प्रसन्न होना
श्रीगणेश करना = प्रारंभ करना
आँखें फैल जाना = चकित होना
फूला न समाना = बहुत खुश होना
तैश में आना = जोश/आवेश में आना
हाथ बँटाना = सहयोग करना

सुनो तो जरा

अपनी बोली भाषा का कोई त्योहार गीत सुनो, सुनाओ ।

वाचन जगत से

समाचार पत्र से न्याय संबंधी कोई घटना पढ़ो । उससे संबंधित रोचक तथ्य बताओ ।

बताओ तो सही

'बेटी बचाओ' अभियान पर सूचनानुसार सामग्री तैयार करो और सुनाओ :

- पोस्टर
- घोषवाक्य
- सुविचार
- विज्ञापन

खोजबीन

'मृदा परीक्षण' से संबंधित सरकारी योजनाएँ ढूँढ़कर ज्ञात करो और लिखो :

- मृदा के प्रकार
- प्रयोगशाला और विधि
- लाभान्वित व्यक्ति

www.soilhealth.dac.gov.in

अध्ययन कौशल

भाषाई सौंदर्यवाले वाक्य, उद्‌धरणों का संकलन करो और लेखन में प्रयोग करो ।

*** इस पाठ पर आधारित ऐसे प्रश्न तैयार करो जिनके उत्तर निम्न शब्द हों :**

(क) अक्षम्य और कठोर दंड
(ख) ईश्वरीय न्याय और संपदा
(ग) सुनहली दौलत
(घ) चौक-बाजार
(च) गुरु और अन्य एकत्रजन
(छ) सुंदर बाग

सदैव ध्यान में रखो

स्वतंत्रता प्रत्येक का अधिकार है ।

भाषा की ओर

निम्न वाक्य पढ़ो । वाक्यों के वचन बदलकर परिवर्तित वाक्य पुनः लिखो ः

१. मैं बुरी रीति को मिटाना चाहता हूँ ।
....

२. खेत में सिंचाई के लिए नहर से पानी लेते हैं ।
....

३. छतों पर रखी पानी की कटोरियाँ खाली थीं ।
....

४. विद्‌यार्थी ने अतिथि को माला पहनाई ।
....

५. चोर कीमती वस्तुएँ लेकर भाग गए ।
....

६. कुटी में साधु ध्यान लगाकर बैठे हैं ।
....

७. वन में मोर नाचता है ।
....

८. हमने स्वतंत्रता दिवस पर नारे लगाए ।
....

९. सभा में राजा सहयोगी से चर्चा कर रहे थे ।
....

१०. गुणवान वधू की प्रशंसा होती है ।
....

● पढ़ो और समझो :

४. पहचानो तो !

प्रस्तुत संवाद के माध्यम से लेखक ने विद्‌यार्थियों को कृति एवं बुद्‌धिमंथन के लिए प्रोत्साहित किया है ।

[चित्रकार, अभिनेता, वैज्ञानिक, पत्रकार बगीचे में बैठकर आपस में बातचीत कर रहे हैं । अचानक कुछ शोर-सा सुनाई पड़ता है । सभी उस ओर देखने लगते हैं ।]

अभिनेता : ये कैसा शोर है ? जरा पता करो कि बात क्या है ?

पत्रकार : मैं देखती हूँ कि कौन शोर मचा रहा है ।

वैज्ञानिक : कहीं भी शांति नहीं है । जहाँ जाओ वहीं शोरगुल, वही भीड़-भाड़ ।

पत्रकार : **(लौटकर)** सुनो मित्रो, ये तो बड़ी मजेदार घटना है । कुछ अंक अपनी गणित की किताब से निकलकर इस बगीचे में घूमने आए हैं ।

अभिनेता : हा-हा-हा ! भला ऐसा भी कभी होता है !

चित्रकार : होने को क्या नहीं हो सकता ? ये दुनिया बड़ी जादूभरी है ।

वैज्ञानिक : चलो, जरा देखें तो ये अंक किताबों से बाहर कैसे दिखाई देते हैं !

पत्रकार : पर आप लोग इनको पहचान नहीं पाएँगे । ये अंक रूप बदलकर आए हैं ।

अभिनेता : यानी ये अभिनय कर रहे हैं । वाह-वाह ! चलो चलें ! हम भी आनंद लें इनके अभिनय का ।

पत्रकार : हाँ, ये सब गणित को छोड़कर भाषा के रंग-बिरंगे मुखौटे पहनकर, भेष बदलकर आए हैं ।

चित्रकार : चलें, सब मिलकर देखते हैं इनका खेल । **(वे सब उनके पास पहुँचे तो दंग रह गए । ये अंक आज कितने सुंदर और आकर्षक लग रहे हैं । जोड़ना-घटाना तो उनकी नियति थी । आज तो ये संक्रियाएँ और भी मजेदार हो गई हैं ।)**

वैज्ञानिक : अरे वाह ! आओ बच्चो तुम भी देखो; समझो और करो :

एक साल के दिन	+	लीप वर्ष में फरवरी के दिन	+	एक सप्ताह के दिन	=	३६५+२९+७
तीन सौ पैंसठ	+	उनतीस	+	सात	=	चार सौ एक

❑ पाठ का मौन वाचन कराएँ । दिए गए विषय पर प्रश्नोत्तर एवं चर्चा कराएँ । उदाहरण की तरह एक से सात तक के गणितीय प्रश्नों के हल, अक्षरों में लिखवाएँ । विद्‌यार्थियों से १ से १०० तक की उलटी गिनती अंकों, अक्षरों में लिखवाएँ, एक-दूसरे से जाँच कराएँ ।

१. इंद्रधनुष के रंग	+	चौराहा	+	एक हाथ की उँगलियाँ	=			
	+		+		=			
२. घड़ी की सुइयाँ	+	घड़ी के कुल अंक	+	दो दिन के घंटे	=			
	+	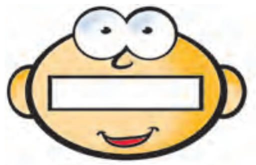	+		=			
३. शिक्षा दिवस	+	संविधान दिवस	+	विज्ञान दिवस	=			
	+		+		=			
४. क्रिसमस दिवस	+	योग दिवस	+	महाराष्ट्र दिवस	=			
	+		+		=			
५. एक पखवाड़ा	+	पंचमी तिथि	+	साक्षरता दिवस	=			
	+		+		=			
६. गांधी जयंती	+	बाल दिवस	+	गणतंत्र दिवस	=			
	+		+		=			
७. अप्रैल का महीना	+	अगस्त महीने के कुल दिन	+	जून के कुल दिन	=			
	+		+	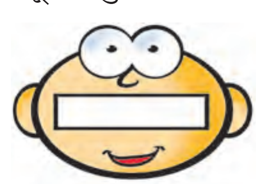	=			

❑ पाठ में आए 'विशेष दिवसों' पर चर्चा कराएँ। इनमें से उनकी पसंद के किन्हीं दो 'दिवस विशेष' पर आठ से दस वाक्य लिखवाएँ। इसी प्रकार के खेल उन्हें तैयार करने के लिए प्रोत्साहित करें। आवश्यकतानुसार गणित, विज्ञान के शिक्षकों की सहायता लें।

● **पढ़ो और समझो :**

५. चिड़िया की पाती

– राजेश गनोदवाले

जन्म : ५ मई १९६७ रायपुर (छ.ग.) **रचनाएँ :** एक शहर था रायगढ़, शैलचित्र, पाँच कॉफी टेबल बुक आदि **परिचय :** गत २५ वर्षों से पत्रकारिता के क्षेत्र से संलग्न, अनेक पुरस्कारों से सम्मानित, कला समीक्षक के रूप प्रसिद्ध हैं ।

प्रस्तुत पत्र के माध्यम से लेखक ने वृक्ष, पर्यावरण एवं प्राणी संरक्षण के लिए हमें जागृत किया है ।

अध्ययन कौशल

'पर्यावरण सप्ताह' के बारे में पोस्टर बनाने हेतु निम्न मुद्दों की सहायता से चर्चा करो :

वर्ड आर्ट | ग्राफिक आर्ट | चित्र | कालावधि

माननीय मुख्यमंत्री जी,

सादर नमस्कार ।

मैं, गौरैया हूँ । वही जिसे आप सब चिड़िया कह लिया करते हैं । वही गौरैया जो आपके गाँव के घर के आँगन में फुदकती रहती थी । जिसे बचपन में भोजन करते समय आप चावल के दाने खिलाया करते थे । जिसके घोंसले देखने के लिए कभी-कभी दिनभर भटकते रहते थे । जंगल कट गए । मैं भी शहर में आ गई । चौंक गए न, कि भला चिड़िया का मुख्यमंत्री से क्या काम ? वैसे भी मेरी औकात इतनी कहाँ कि आपके सामने फरियाद लाऊँ, एकाध बार मन बनाया कि जनदर्शन में मिलूँ लेकिन सफलता हाथ नहीं लगी । कोई हमारी पंचायत तो है नहीं लेकिन अधिकारियों ने इधर हालात ही कुछ ऐसे कर दिए कि अपनी पीड़ा (वैसे हम सबकी) आपके सामने कहने का साहस किया क्योंकि मैं आपके राज्य की निवासी हूँ सो आप ही नजर आ रहे हैं । आपसे सबका काम पड़ता रहता है तो भला इस दुख की घड़ी में मैं कहाँ जाऊँ ? मैं आप तक पहुँच सकती नहीं । अतः पत्र लिखकर अपनी बात आप तक पहुँचा रही हूँ ।

बात ऐसी है, मैं टाउन हॉल परिसर में रहा करती थी, पता ठिकाना तो मेरा अब भी नहीं है लेकिन घर उजड़ गया । आप याद कीजिए इसी टाउन हॉल के बाहर दो घने पेड़ थे । अपने रंग में रँगे हुए हरे-भरे लहलहाते झूमते रहते थे । कभी किसी को कोई कष्ट नहीं पहुँचाते थे । अच्छे तंदुरुस्त बिलकुल एक किनारे, किसी के लिए इन पेड़ों ने कभी अड़चन पैदा नहीं की । हमारी बिरादरी के लिए तो जैसे दोनों बुजुर्ग पेड़ वरदान थे । मेरी माँ से मैंने सुना था उनकी माँ भी इसी पेड़ की ऊपरी शाखा पर जन्मी थीं । जानते हैं, इसी पेड़ में मैंने अपना जीवन साथी पाया । बीते वसंत में मेरा परिवार बढ़ा और मैं भी दो बच्चों की माँ बनी । बच्चे मुझी पर

❑ उचित आरोह-अवरोह के साथ किसी परिच्छेद का आदर्श वाचन करें । विद्यार्थियों से मुखर वाचन कराएँ । प्रश्नोत्तर एवं चर्चा के माध्यम से पाठ में आए मुद्दों को स्पष्ट करें । 'वृक्षों की आवश्यकता और उपयोगिता' विषय पर निबंध लिखने हेतु प्रेरित करें ।

स्वयं अध्ययन

'सौजन्य सप्ताह' के लिए घोषवाक्यों सहित चित्र बनाओ और विद्‌यालय में प्रदर्शनी लगाओ ।

गए हैं, ऐसा रिश्तेदार कहा करते थे । अपनी दिनचर्या के मुताबिक इन बच्चों को घोंसले में बेखौफ छोड़ मैं दाना-पानी की तलाश में उड़ जाया करती थी । सभी जानते हैं कि हम वैसी भी नरम-नाजुक हुआ करती हैं; उसपर हमारे बच्चे । उनकी उम्र ही क्या थी । उस समय वे इतने कोमल थे कि पेड़ों की पत्तियों का शोरगुल सुन आँखें मूँद लिया करते थे, फिर दिनभर का शोरगुल अलग । इन पेड़ों का यही घनापन भयंकरतम शोर को रोक दिया करता था और मैं अपने बच्चों के संग चैन की नींद में डूब जाया करती थी । दोपहर में मैंने लोगों को इन्हीं वृक्षों की छाँह में दो पल सुस्ताते भी देखा है । कई दफा हॉल के कार्यक्रमों में आए मेहमान भी इन्हीं पेड़ों की छाँह में बैठे खाना खाते दिखते थे । इसी बहाने हमें भी कुछ दाना-पानी मिल जाता था ।

सब कुछ ठीक था कि अचानक एक रोज हम लोगों की दुनिया उजड़ गई । अचानक कुछ लोग आए और इन पेड़ों के इर्द-गिर्द चक्कर काटने लगे । उनके

इरादे ठीक नहीं थे, मैं इतना डर गई कि उस दिन घोंसले से निकली नहीं, मेरे बच्चे तो पंखों की ओट में दुबक गए । शाम होने को आई; मैं घोंसले में ही रही । सूरज डूब रहा था । शाखाएँ भी शांत थीं और पेड़ सोने की तैयारी में । अचानक लगा पेड़ को कोई पूरी तरह हिला रहा हो । देखा तो कलेजा मुँह को आ गया । पेड़ काटा जा रहा था, मैं अपने बच्चों को सँभाल भी न सकी जैसे तेज आँधी चली हो । कुछ ही समय में वह पेड़ जमीन पर था और मेरे बच्चों का कहीं अता-पता नहीं, ना मालूम किधर फेंका गए। पेड़ क्या कटा हमारे भाई-बंद, सखा सब उजड़ गए ।

पता चला कि सौंदर्यीकरण में बाधा थे ये पेड़ इसीलिए काटे गए । मुझे नई जानकारी मिली कि पेड़ों से सौंदर्य खराब होता है । हमने तो उस पेड़ में बसेरा बनाया था जो न ही ट्रैफिक के हिसाब से परेशानी खड़ी करता था और न ही सौंदर्य के पहलू से, वरन ये पेड़ घनी छाया देते थे । खैर, अपने बच्चों के चक्कर में, मैं पेड़ कटने का दर्द लगभग भूल गई थी । चिट्‌ठी लिखने की नौबत भी नहीं आती लेकिन सौंदर्यीकरण की दुहाई देते आठ-दस पेड़ों पर फिर कुल्हाड़ी चल गई । अब जो पेड़ कटे वे कलेक्टोरेट के पीछे एक झुरमुटे में से हैं, जहाँ मैंने नया ठिकाना ढूँढ़ा था । भला अब इन पेड़ों से कैसी बाधा थी ? बड़ा अजीब है । वैसे भी आजकल शहरों में पेड़ों का 'सफाया उत्सव' चल रहा है । प्रशासन और अफसर, कौन देता है अनुमति ? ठीक है विकास होना चाहिए, 'फोर लेन' जरूरी है लेकिन कोई ये क्यों नहीं समझता कि पेड़ और पक्षी भी उतने ही जरूरी हैं ।

ताज्जुब मुझे इस बात का होता है कि पर्यावरण की बात करने वाले लोग, सभा-समितियाँ भी मौन साधे बैठी हैं ! कोई सरकारी अफसर तो इस तरफ सोचने से रहा । इतना तो आप भी जानते हैं कि आजकल पेड़ों के विस्थापन की नई तकनीक आ गई है । अब तो

❑ 'गौरैया' के संरक्षण हेतु विद्‌यार्थी क्या-क्या कर सकते हैं, उनसे पूछें । उनके आस-पास के वृक्षों की सूची बनवाएँ । इस पत्र के मूल आशय को विद्‌यार्थियों को बताने के लिए प्रोत्साहित करें । वृक्षों के योगदान पर भित्तिचित्र, पोस्टर, घोषवाक्य बनवाएँ ।

वाचन जगत से

किसी महान विभूति द्‌वारा लिखे गए पत्रों के संग्रह को पढ़ो तथा संकलन करो ।

पूरा का पूरा पेड़ उठाकर ठीक उसी तरह इनका अन्यत्र रोपण किया जा सकता है । हम उसकी मदद ले सकते हैं पर ऐसा भी नहीं हो रहा । आरी वहाँ-वहाँ तो चल ही रही है जहाँ कोई चारा नहीं लेकिन वहाँ क्यों, जिधर जरूरत नहीं है ।

पहले विचार किया कि अपनी बिरादरी के संग आपसे मन का दुख बाँटती, पर मिलना आसान कहाँ, फिर उससे फायदा भी क्या होता ? आपके पास समय कहाँ है । आजकल सब कुछ है ये मुआ वक्त ही तो नहीं है । एक ही चारा नजर आया, चिट्‌ठी लिखूँ । कहते हैं, पीड़ा का अनुभव वैद्‌य ही कर पाते हैं। आपसे बड़ा भला कौन वैद्‌य हो सकता है । आपके पास इतने संसाधन हैं । आपके एक इशारे पर चीजें इधर से उधर हो जाती हैं । मैंने सोचा कि अपनी बात आप तक पहुँचाऊँ । फिर सोचा कि भला मेरी बात कौन आप तक पहुँचाएगा ? बहुत सोच-विचार करके यह पत्र लिख रही हूँ । पत्र में मैं विस्तृत रूप से अपने एवं अपने साथियों पर आए संकट का विवरण दिया है। बिना पत्र के आपको कैसे पता लगेगा कि हमारी पूरी प्रजाति संकट में है । शहर-गाँव हमारे ठौर-ठिकाने थे, धीरे-धीरे वे नष्ट होते जा रहे हैं, बड़ी खामोशी से हम गायब हुई जा रही हैं । कभी समय मिले तो पैदल घूमकर देखिए । धूल से फेफड़े जाम हो रहे हैं । कोई ठीक से साँस भी नहीं ले पाता, पेड़-पौधों की हरी पत्तियाँ तो ऐसे नजर आती हैं मानो उन्हें पीलिया हो गया हो । ताजा हवा की तलाश में सुबह लोग घूमने निकलते हैं । वे हवा कम, प्रदूषण अधिक लेकर लौटते हैं ।

इन बगीचों में सुबह-सुबह मैं जब लोगों को हँसते देखती हूँ तो मेरे लिए तय करना मुश्किल हो जाता है कि वो हँस रहे हैं या हाँफ रहे हैं ! शिकायत इसीलिए नहीं करने बैठ गई कि मेरा घोंसला उजड़ गया । पेड़ हम सबके हैं, हमारी उम्र तो वैसे भी कम हुआ करती है । आप लोग देखिए, कैसे जी पाएँगे ? आपके सामने तो पूरी पीढ़ी है । कैसे जिएगी ? क्या होगा अपने आने वाली पीढ़ी का भविष्य ? मेरी बातें कड़वी लगे तो क्षमा कर दीजिएगा । यों भी मेरे फेफड़े जल्दी जवाब देने लगते हैं । फिर किसी घने पेड़ में फुदकती हूँ तो कुछ राहत मिलती है । काफी समय लिया, बड़ी व्यस्त दिनचर्या रहती है आपकी । मैं भी अपने बच्चों की तलाश में निकलती हूँ । न जाने दोनों हैं भी या नहीं, हैं तो किस हाल में । कड़ा कदम उठाइए, ताकि हमारा यह नगर, हमारा राज्य हरा-भरा बना रहे ।

सादर
आपकी गौरैया,
निवासी उजड़ा घोंसला,
उपवन नगरी, अपना राज्य

❑ पाठ से कुछ वाक्यों का चुनाव करके रचना के अनुसार वाक्यभेद बताने एवं लिखने के लिए प्रेरित करें । यदि उनके आसपास वृक्षों की कटाई हो रही है तो वे क्या करेंगे ? उनकी भूमिका क्या होगी, इसके संदर्भ में किनसे संपर्क करेंगे, पूछें ।

मैंने समझा

शब्द वाटिका

नए शब्द

औकात = हैसियत, वश

बिरादरी = एक ही जाति का समूह

बेखौफ =बिना डर के, निडर

चारा = घास

पीलिया = एक रोग

मुहावरा

मौन साधकर बैठना = शांत होकर बैठना

विचार मंथन

।। वृक्षवल्ली आम्हां सोयरे वनचरे ।।

जरा सोचो ..... चर्चा करो

हमारी पृथ्वी के पास अगर दूसरा सूरज आ जाए तो ....

मेरी कलम से

संचार माध्यमों पर मुद्दों के आधार पर निबंध लिखो :

- लाभ
- हानि
- उपसंहार

सुनो तो जरा

दूरदर्शन के विज्ञापन सुनो और पुनःस्मरण करते हुए नए रूप में सुनाओ ।

बताओ तो सही

'संतुलित आहार' इस विषय पर संवेदनायुक्त भाषण दो :

- प्रस्तावना
- जीवनसत्त्व
- स्वानुभव
- निष्कर्ष

खोजबीन

'आम्ल वर्षा' की जानकारी अंतरजाल की सहायता से खोजकर लिखो :

- निर्मिति
- कारक
- परिणाम

✲ **पाठ के आधार पर लिखो :**

(क) चिड़िया को मुख्यमंत्री के नाम पत्र लिखना पड़ा ।

(ख) चिड़िया का उन पेड़ों से आत्मिक संबंध ।

(ग) चिड़िया को आश्चर्य हुआ ।

(घ) चिड़िया की बुरी हालत ।

सदैव ध्यान में रखो

संतुलित पर्यावरण के लिए 'इको फ्रेंडली' होना चाहिए ।

भाषा की ओर

निम्न वाक्य पढ़ो । इन वाक्यों के अधोरेखांकित शब्दों के लिंग बदलकर परिवर्तित वाक्य पुनः लिखो :

१. रेल स्थानक पर निवेदिका उद्घोषणा करती है ।

....

२. मेरा पुत्र गीत प्रस्तुत कर रहा था ।

....

३. सफेद घोड़ी तेज दौड़ती है ।

....

४. भारत वीरों की भूमि है ।

....

५. सभा में विद्‌वान शास्त्रार्थ करेंगे ।

....

६. मालकिन नौकर से काम करवा रही है ।

....

७. शेर शावकों को शिकार के गुर सिखाता है ।

....

८. भाभियों ने इस वर्ष जमकर होली खेली ।

....

९. बंदर नकलची होता है ।

....

१०. साम्राज्ञी नौका विहार का आनंद ले रही थी ।

....

● सुनो, समझो और सुनाओ :

६. हँसिकाएँ

– डॉ. सरोजनी प्रीतम

जन्म : ६ सितंबर १९३९ **रचनाएँ :** पंखोंवाला फूल, मूरखचंद, मेरी प्रतिनिधि हँसिकाएँ, चूहे और आदमी में फर्क, लाइन पर लाइन, आखिरी स्वयंवर **परिचय :** सरोजनी प्रीतम आधुनिक हिंदी साहित्य की सुपरिचित महिला साहित्यकार और कवयित्री हैं ।
प्रस्तुत क्षणिकाओं में हास्य-व्यंग्य के माध्यम से कवयित्री ने समाज की विसंगतियों को चित्रित किया है ।

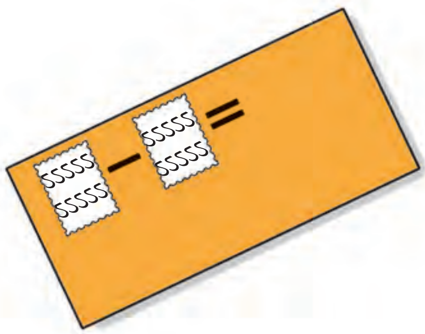

❊ फल

आज की पीढ़ी कितनी तेज है !
सब्र का फल मीठा
लेकिन उन्हें मीठे से परहेज है ।

❊ समस्या का निदान

दस रुपये और तीन रुपये के
डाक टिकट लाए
दुविधा में थे-सात रुपये का
टिकट कैसे लगाएँ ?
नन्हे ने देखा तो -
नन्हे का था कहना
'दस और तीन की दो
टिकटें लगाकर
बीच में ऋण का चिह्न
लगा देना ।'

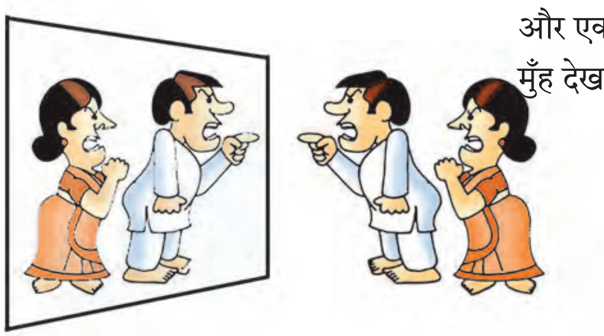

❊ दर्पण

साहित्यकार पति ने कहा,
''साहित्य को सब अर्पण है ।''
'दर्पण' सुनकर वे बोलीं,
''ठीक है, इससे ज्यादा सिर मत फोड़ना
और एकाध दर्पण
मुँह देखने के लिए भी रख छोड़ना ।''

❊ बीमा

सुनो जी, खुश हो जाओ ।
मेरा तो दो लाख का बीमा हो गया
तो गुस्से से अनपढ़ पत्नी बोली
खुशी तो उस दिन होगी
जिस दिन ये रकम जल्दी मिले,
इसके लिए करना क्या पड़ता है ?
वो बोले- पहले मरना ही पड़ता है ।

❑ उचित आरोह-अवरोह, हाव-भाव के साथ हँसिकाएँ विद्यार्थियों को सुनाएँ । एकल एवं गुट में इन कविताओं को अभिनय के साथ सुनाने के लिए कहें । विद्यार्थियों को सुने हुए अन्य हास्य गीत, पढ़ी हुई हास्य कविता या चुटकुले सुनाने के लिए प्रेरित करें ।

● **पढ़ो, समझो और बताओ :**

७. बादलों की काव्य सृष्टि

–आचार्य काका कालेलकर

जन्म : १ दिसंबर १८८५, सातारा (महाराष्ट्र) **मृत्यु :** २१ अगस्त १९८१ **रचनाएँ :** स्मरण-यात्रा, धर्मोदय, हिमालयनो प्रवास, लोकमाता, जीवननो आनंद, अवरनावर **परिचय :** आचार्य कालेलकर जी प्रसिद्ध शिक्षाशास्त्री, पत्रकार और स्वतंत्रता संग्राम के विख्यात सेनानी थे । प्रस्तुत निबंध के माध्यम से काका कालेलकर जी ने हमें पहाड़ों एवं बादलों के सौंदर्य से अवगत कराया है ।

जरा सोचो ..... चर्चा करो

यदि तुम बादल बन जाओ तो ....

कहाँ जाओगे ?

क्या करोगे ?

आकाश के बादलों का वर्णन और काव्य जितना वैज्ञानिकों ने किया है उतना कवियों ने शायद ही किया होगा । अगर किया हो तो मेरी नजर में नहीं आया । किसी भी देश के कवि को ले लीजिए । बादलों की शोभा से वे आकर्षित तो होते ही हैं । कुदरत का वर्णन करते हुए वे कभी बादलों को नहीं भूलते लेकिन बादलों का नाम लिया, दो-चार शब्दों में उनका वर्णन किया तो उनके मन में बादलों का तर्पण यथेष्ट हो गया । बादलों को रूई की उपमा दी, सफेद ऊन की उपमा दी या कभी कुमकुम की उपमा दी तो पूरा हो गया । सच्चे बादल-प्रेमियों को इससे संतोष कैसे होगा ?

मेरे बचपन में जब हम विज्ञान पढ़ते थे तब बादलों के चार मुख्य विभाग बताए जाते थे । ये चारों किस्म के बादल आसानी से पहचाने जाते हैं । लेकिन आज जलवायु के शास्त्र के साथ बादलों का विज्ञान भी बहुत कुछ बढ़ गया है और बादलों के असंख्य प्रकार, उनकी खूबियाँ और उनके नाम सबका विस्तार इतना बढ़ा है कि प्रकृति प्रेमी कवि कहीं के कहीं पिछड़ गए हैं । हमारे प्राचीन कवि काले श्याम बादलों को राक्षसों की उपमा देते थे । नव जलधर को देखते ही उन्हें दृप्त निशाचर का भ्रम होता था । जलराशि के भार से 'भूरि विलंबिनो घनो' को देखकर उन्हें परोपकारी सज्जनों की नम्रता याद आती थी । 'भडली वाक्य' की रचना करने वाले सहदेव के शिष्य किसान या खलासी लोग बादलों का जितना निरीक्षण करते थे उतना कवियों ने किया हो तो वह अभी तक हमारे सामने आया ही नहीं है ।

हमारे कवियों ने छहों ऋतुओं के कितने-कितने सुंदर वर्णन किए हैं किंतु छहों ऋतुओं के बादलों की अलग-अलग शोभा उन्होंने क्यों नहीं दी ?

उषा काल के बादल, सूर्योदय के बादल, दोपहर के निराग्रही, अनासक्त बादल, संध्या के उज्ज्वल और विलासी बादल और रात के राक्षसों जैसे बादल इनका अलग-अलग वर्णन, वर्णन तो क्या व्यक्ति परिचय हमें

❑ किसी एक परिच्छेद का आदर्श वाचन करें । मुखर एवं शुद्‌ध वाचन कराएँ । प्रश्नोत्तर एवं चर्चा के माध्यम से पाठ के सभी मुद्‌दों को स्पष्ट करें । अंतरजाल/पुस्तकालय के माध्यम से 'बादलों' के बारे में अधिक जानकारी प्राप्त करने के लिए प्रेरित करें ।

विचार मंथन

।। हर बूँद मोती नहीं बनती ।।

मिलता है । पूर्णिमा के दिन चंद्र के साथ खेल करने वाले बादल और द्‌वितीया के चंद्र की शोभा बढ़ाने वाले बादल एक से नहीं होते । बारिश के दिनों में सारे आकाश पर अपना साम्राज्य जमाकर अनंत आकाश को संकुचित करने वाले बादल जुदे और सारे क्षितिज पर अपना व्यवस्थित वलय फैलाकर आकाश के नीले गुंबद की अखंड शोभा बढ़ाने वाले बादल जुदे ।

हिमालय जैसे पहाड़ों के शिखर पर सवार न होते हुए शिखर के नीचे फैलकर शिखर को स्वर्गीय उन्नति देने वाले बादल अलग और उन्हीं शिखरों की शोभा सस्ती न बने इसलिए उनके सामने परदा खड़ा करने वाले बादल अलग । अगर कोई माने कि समुद्र के ऊपर के बादल और रेगिस्तान के ऊपर के बादल एक ही किस्म के होते हैं तो कहना पड़ेगा कि ऐसे लोगों ने बादलों का निरीक्षण ही नहीं किया ।

जिन ऋतुओं में आकाश के वायु या पवन सैकड़ों मील सीधे दौड़ते हैं उन ऋतुओं में हाथ के पंजे की उँगलियों के जैसे बादलों के पंखे क्षितिज पर आमने-सामने दीख पड़ते हैं । कभी दक्षिणोत्तर तो कभी पूर्व-पश्चिम । वास्तव में आकाश में ऐसे पंखे नहीं होते । लेकिन वह एक प्रकार का दृष्टिभ्रम है । रेल की सीधी पटरियाँ दूर जाते एकत्र मिलती-सी दीख पड़ती हैं, वैसा ही यह दृष्टिभ्रम है ।

हम पहले से मानते और कहते आए हैं कि बादलों का क्षेत्र अनंत है । लेकिन हमें उन क्षेत्रों की पूरी कल्पना नहीं थी । वह तो हमारी पृथ्वी पर खड़े होकर आकाश की ओर ताकने से बनी हुई मर्यादित कल्पना थी । कभी-कभी पहाड़ की चोटी पर से नीचे की ओर फैली हुई घाटियों की तरफ देखने से बादलों की सारी शोभा नई ही बन जाती है । पुणे के पास सिंहगढ़ के पहाड़ी किले पर मैं काफी रहा हूँ । वहाँ पहाड़ पर से कच्चे बादल दौड़ते दीखते थे। नीचे की खीण (घाटी) में

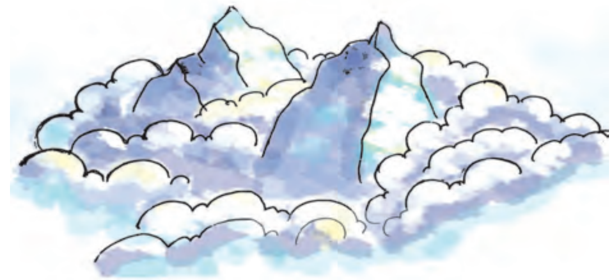

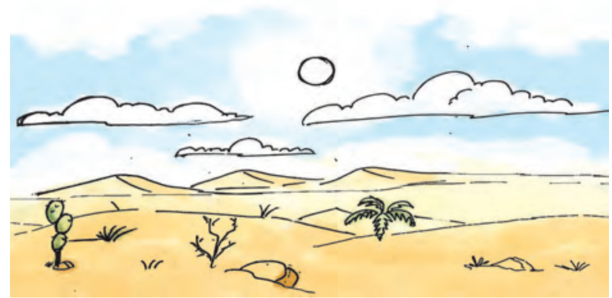

कायोत्सर्ग करके कूद पड़ते थे तब उनकी वीरता देखकर मैं दंग रह जाता था । इससे उलटा जब हिमालय की घाटियों में रात को सोए हुए बादल सुबह आठ नौ बजे के बाद आँखें मलते-मलते उठते थे और धीरे-धीरे आकाश में ऊँचे जाकर उत्तर की यात्रा के लिए प्रस्तुत हो जाते थे तब मैं बादलों के राष्ट्रों का इतिहास समझने की कोशिश करता था ।

जब हवाई जहाज में बैठकर हम पृथ्वी को छोड़ सकें और बादलों को बींधकर उनके भी ऊपर जा सकें तब तो सारी दृष्टि ही बदल गई । जब पृथ्वी छोड़कर मनुष्य बादलों को भी ऊपर से देखता है, तब तो अभूतपूर्व या अदृष्टपूर्व विस्तार उसे देखने को मिलता है । सैकड़ों मील तक फैले हुए बादलों के पहाड़ उनके उत्तुंग शिखर और बीच की घाटियाँ, यह सब देखकर मनुष्य कहने लगता है कि 'पिछली जिंदगी में हमने ऐसे नजारे की कल्पना भी नहीं की थी ।'

इन व्योम काव्यों में इंद्रधनुष भी होते हैं, उभयसंध्या की शोभा भी होती है । बादलों के अंदर अथवा बादलों से बने हुए रेगिस्तान भी देखने को मिलते हैं और बीच-बीच में छोटे-मोटे सरोवर भी बनते हैं । सचमुच पृथ्वी की उदारता से वातावरण को जो बादल मिलते हैं उनके लिए सूर्य की किरणों के प्रति हमें कृतज्ञ होना चाहिए ।

- पाठ में आए विशेष संदर्भों के बारे में पुस्तकालय एवं अंतरजाल से जानकारी प्राप्त करके कक्षा में सुनाने के लिए विद्‌यार्थियों को प्रेरित करें । 'बादल बनने की प्रक्रिया' का वर्णन करने के लिए उन्हें प्रोत्साहित करें ।

सुनो तो जरा

आकाशवाणी, ई-न्यूज, दूरदर्शन से खेल संबंधी समाचार सुनो और सुनाओ ।

सूर्य की किरण, आकाश की पवन और पहाड़ों के प्रतिबंध सबके सहयोग से बादलों की सृष्टि पैदा होती है और एक विशाल यज्ञ चक्र चलता रहता है । समुद्र का पानी बादल के रूप में आकाश में चढ़ता है और बारिश के रूप में समुद्र के पास पहुँच जाता है । बादलों में फटे हुए बादल बड़े सुहावने लगते हैं । बादलों के पुंज के ढेर जब बनते हैं तब तो वे बर्फ के पहाड़ों के जैसे भव्य और स्वर्गीय दीख पड़ते ही हैं लेकिन केवल घने बादल शायद ही विशेष शोभास्पद होते हैं ।

जिंदगी में हिमाच्छादित शिखर पहली बार देखने से ऐसी धन्यता हुई कि आयुष्य में इस दिन का महत्त्व दृढ़ करने के लिए मैंने उस दिन अपनी छोटी-सी वासरी में उसका विशेष जिक्र किया था । विशालकाय सफेद-सफेद शिखर देखकर ही मैं तृप्त और मस्त हुआ था लेकिन देखा कि वे भव्य पहाड़ भी अपने ढंग का नखरा कर सकते हैं । जब सूरज पश्चिम की ओर ढल पड़ा तब शिखरों के रंग कुछ फीके पीले-से हो गए । अब वे पहले से ज्यादा मोहक होने लगे । बर्फ के रंग देखते-देखते ऐसे बदलने लगे कि एक क्षण के लिए भी नजर उनपर से हटना कोई अजीब सुंदरता खोवे जैसा था और कितना आश्चर्य कि इतनी विलक्षण चंचलता का प्रत्यक्ष साक्षात्कार होते हुए भी पहाड़ के चेहरे पर की गंभीरता याकाचित भी नष्ट नहीं होती थी ।

एक जगह खड़े रहने पर हिमालय के अनेकानेक शिखरों की एक पंक्ति उत्तर की ओर जब प्रकट होती है तब उसकी शोभा और उसकी भव्यता तो अवर्णनीय है ही । इससे भी अधिक ऊँचे जाकर जब नजर के सामने बीस-पचीस मील के प्रदेशों में शिखरों का बैठा हुआ सम्मेलन दीख पड़ता है तब वह भव्यता गौण होती है और विराट की समृद्धि ही हृदय को दबा देती है ।

हिमालय के बर्फीले पहाड़ों के ये जो एक सिरे से दूसरे सिरे तक दर्शन हुए उनका स्मरण और वह अनुभव वर्षों तक चला । नैनीताल, अल्मोड़ा होकर कौसानी, वहाँ से उत्तर की ओर हिमालय तक सुदीर्घ, प्रदीर्घ, अनवरत शिखर माला दीख पड़ती है ।

ये शिखर हैं अत्यंत शीतल । उनका दर्शन भी उपशमप्रेरक, शांत, शीतल ही है । लेकिन एक तो इनका दर्शन निरंतर नहीं हो सकता और जब होता है तब ऐसे उत्कट और जीवन समृद्ध भावों को वे जागृत करते हैं कि उनका दर्शन ध्यान के लिए नहीं किंतु कवि की प्रतिभा के लिए ही पोषक है । जिस तरह एकरूप बादलों में भी अनंत और अकूत विविधता भरी रहती है उसी तरह इन कर्पूरगौर हिमशिखरों में भी केवल आकृति की नहीं, रंगों की छटा ही नहीं किंतु भावोत्कटता की भी अमर्याद विविधता होती है । जीवन के विविध और समृद्ध अनुभवों को जागृत करके उनका नवनीत निकालने के लिए इन शिखरों का दर्शन, स्मरण और चिंतन हर तरह से उपकारक हैं ।

❑ 'बादल की आत्मकथा' इस विषय पर दस-पंद्रह वाक्यों में निबंध लिखने के लिए कहें । पाठ में वर्णित विविध बादलों के चित्र बनाने के लिए प्रेरित करें । इंद्रधनुष के मूल रंग और उनसे बनने वाले रंगों के नाम लिखवाएँ ।

मैंने समझा

शब्द वाटिका

नए शब्द

कुदरत = प्रकृति	**उत्तुंग** = ऊँचे
यथेष्ट = पर्याप्त	**याकाचित** = कभी
जलधर = बादल	**उपशम** = इच्छा
दृप्त = प्रचंड	**वासरी** = छोटा घर
जुदे (जुदा) = अलग	**उत्कट** = तीव्र
वलय = घेरा	**अकूत** = अत्यधिक
अनंत = अंतहीन	**अमर्याद** = असीम

स्वयं अध्ययन

मच्छरों के कारण फैलने वाले रोगों के संदर्भ में वैज्ञानिक जानकारी अंतरजाल/पुस्तकालय से प्राप्त करो और बताओ :

- रोग का नाम
- लक्षण
- उपाय

मेरी कलम से

जागतिक तापमान वृद्‌धि के कारण, इनपर होने वाले परिणाम ढूँढ़ो और चार्ट बनाओ :

- मानव
- जंगल
- जलस्रोत

बताओ तो सही

जब तुम बीमार होते हो तो उस समय घर के सदस्यों का तुम्हारे साथ होने वाला व्यवहार बताओ ।

- बहन-भाई
- दादी जी-दादा जी
- नाना जी-नानी जी
- माता-पिता

वाचन जगत से

माता-पिता के भ्रमणध्वनि पर संदेश आया है तो तुम क्या करोगे ?

अध्ययन कौशल

किसी समाजोपयोगी कार्यक्रम का वर्णन करने वाली टिप्पणी बनाओ/तैयार करो :

- कार्यक्रम का नाम
- दिन, समय, आयोजक
- प्रमुख अतिथि
- विशेष कार्यक्रम

खोजबीन

पिछले दो वर्षों के गर्मी के महीनों का तापमान ज्ञात करो और संयुक्त स्तंभालेख बनाओ ।

गणित सातवीं कक्षा पृष्ठ ५१-५२

✲ **इस अर्थ में प्रयुक्त हुए शब्द पाठ में ढूँढ़कर लिखो :**

(क) वसुंधरा = ... (ग) गिरि = ... (च) व्योम = ...

(ख) अनिल = ... (घ) संतुष्टि = ... (छ) उग्र/प्रचंड = ...

सदैव ध्यान में रखो

पर्यावरण शुद्ध रखना प्रत्येक की जिम्मेदारी है ।

भाषा की ओर

निम्नलिखित वाक्यों को पढ़ो और मोटे अक्षरों में छपे शब्दों को समझो ।

१. **हिमालय** देश का गौरव है ।
२. **परिश्रम** सफलता की कुंजी है ।
३. **निखिल** कश्मीर घूमने गया था ।
४. **मुंबई** देश की आर्थिक राजधानी है ।
५. **महासागर** अपने देश के चरण पखारता है ।
६. **दादी जी को** व्यंजन अच्छे लगते हैं ।

ऊपर के वाक्यों में **हिमालय, परिश्रम, निखिल, मुंबई, महासागर , दादी जी** इनके बारे में कहा गया है । वाक्य में जिसके बारे में कहा या बताया जाता है वह **उद्‌देश्य** होता है ।

ऊपर के वाक्यों में हिमालय के बारे में- **देश का गौरव है,** परिश्रम के बारे में-**सफलता की कुंजी है-** निखिल के बारे में- **कश्मीर घूमने गया था,** मुंबई के बारे में-**देश की आर्थिक राजधानी है,** महासागर के बारे में- **अपने देश के चरण पखारता है,** दादी जी के बारे में- **व्यंजन अच्छे लगते हैं,** कहा गया है । उद्‌देश्य के बारे में जो कहा गया है वह **विधेय** होता है ।

✲ निम्न शब्दों का सही क्रम लगाकर वाक्य बनाओ तथा **उद्‌देश्य** और **विधेय** अलग करके तालिका में लिखो :

१. के उत्तर भारत है हिमालय में ।
२. पेड़ रही हैं चींटियाँ चढ़ पर ।
३. होने धीरे-धीरे लगा उजाला ।
४. टिड्डियों साफ ने दिया कर दल पूरा खेत के ।
५. जाती सजीव है पाई पृथ्वी सृष्टि पर ।
६. सुंदर बनाया चित्र ने मृदुल ।

सही वाक्य	उद्‌देश्य	विधेय
१.		
२.		
३.		
४.		
५.		
६.		

● सुनो, पढ़ो और गाओ :

८. चित्र बोलते हैं

– किरण मिश्र अयोध्यावासी

जन्म : ५ जुलाई १९५३ **रचनाएँ :** चुंबक है आदमी, चंद्रबिंब, मजीरा, पंछी भयभीत हैं **परिचय :** नवगीतकार के रूप में प्रसिद्ध हैं। इस कविता में कवि ने तूलिका की ताकत एवं चित्रों की महत्ता को दर्शाया है।

सुनो तो जरा

किसी चित्र के पात्रों के बीच होने वाले संवाद की कल्पना करो और सुनाओ।

सुनो तो जरा की कृति करवाने के लिए आवश्यक सोपान :

- किसी चित्र प्रदर्शनी में देखे हुए चित्रों के बारे में बताने के लिए विद्‌यार्थियों को प्रेरित करें।
- पहला चित्र उन्होंने कब और कैसे बनाया एक दूसरे से पूछने के लिए कहें।
- अन्य चित्र दिखाकर पात्रों के बीच होने वाले संवाद पर चर्चा करें और संवाद कहलवाएँ।

आओ, बैठो यहाँ मन खोलते हैं।
जो मैं नहीं कह पाता वो चित्र बोलते हैं ।।
मन की हमारी बातें, जब मित्र पूछते हैं।
जो मैं नहीं कह पाता वो चित्र बोलते हैं ।।
मन की हमारी बातें ....

रंग लगी तूलिकाएँ कैनवास रँगतीं हैं।
ऐसा लगता कोई नया सृजन करती हैं ।।
सप्तरंगी जीवन के दृश्य खोजते हैं।
जो मैं नहीं कह पाता वो चित्र बोलते हैं ।।
मन की हमारी बातें ....

❑ उचित हाव-भाव, लय-ताल के साथ कविता का पाठ करें। विद्‌यार्थियों से सामूहिक, गुट में कविता का पाठ कराएँ। कविता में आए भावों पर प्रश्नोत्तर के माध्यम से चर्चा करें। कविता के कौन-से भाव उन्हें अच्छे लगे, बताने के लिए प्रेरित करें।

विचार मंथन

।। प्रकृति में बिखरे कितने रंग, मन में भर जाती उमंग ।।

चित्र मेरे आँखों तक ही नहीं सीमित हैं ।
अंतर्मन से देखो हम उनमें जीवित हैं ।।
बस आप तक पहुँचने की राहें ढूँढ़ते हैं ।
जो मैं नहीं कह पाता वो चित्र बोलते हैं ।।
मन की हमारी बातें ....

चित्रों की भाषा पढ़ने की जिन्हें आदत ।
वो जानते हैं चित्रों की ताकत इबादत ।।
रचती वही तूलिका, जो मन में सोचते हैं ।
जो मैं नहीं कह पाता वो चित्र बोलते हैं ।।
मन की हमारी बातें ....

चित्रों के रंग, जीवन में रंगों को भरते हैं ।
चिंतन के सपनों को साकार करते हैं ।।
बनता वही चित्र जो भीतर से देखते हैं ।
जो मैं नहीं कह पाता वो चित्र बोलते हैं ।।
मन की हमारी बातें ....

- विद्‌यार्थियों से कहें कि वे अपनी पसंद का एक चित्र लेकर उसके बारे में दस से पंद्रह वाक्य लिखें । कविता में आए अनुस्वार, अनुनासिक, पंचमाक्षरयुक्त शब्द खोजवाकर इनका वर्गीकरण कराएँ तथा अन्य पंचमाक्षरों से बने शब्द लिखवाएँ ।

मैंने समझा

शब्द वाटिका

नए शब्द

सृजन = रचना
इबादत = पूजा
सप्तरंगी = सात रंगोंवाला
तूलिका = चित्र अंकित करने की कलम या कूँची
राहें ढूँढ़ना = हल निकालना
सपने साकार करना = लक्ष्य प्राप्त करना ।

खोजबीन

रंग कैसे बनते हैं ? ढूँढ़ो और उनके उपयोग पढ़ो :

- प्राकृतिक रंग
- कृत्रिम रंग

जरा सोचो ......चर्चा करो

अगर चित्रों में जान आ जाए तो ......

बताओ तो सही

विविध क्षेत्रों में काम करने वाले कर्मचारी किस रंग की पोशाक (गणवेश) पहनते हैं ?

- नर्स
- वकील
- यातायात पुलिस
- दमकल कर्मचारी
- डाकिया

वाचन जगत से

ब्लॉग से किसी साहसी/वैज्ञानिक कहानी का वाचन करो ।

अध्ययन कौशल

किसी कहानी पर आधारित चित्रों का फोल्डर बनाकर कहानी सुनाओ ।

स्वयं अध्ययन

नीचे दिए गए शब्दों का लिप्यंतरण रोमन (अंग्रेजी) में करो :

तूलिका	भोजन	प्रात:	चाँदनी	जिम्मेदारी
....	....	....	....	....
कौमुदी	पैदल	गेंद	वाद्‌यवृंद	शान
....	....	....	....	....

मेरी कलम से

समाचार पत्र में से मुख्य समाचारों के पाँच वाक्यों का अनुवाद करो ।

✲ **उत्तर लिखो :**

(क) 'चित्र मेरे आँखों तक ही नहीं सीमित' ऐसा क्यों कहा है ?

(ख) रंग लगी तुलिकाएँ कौन-सा काम करती हैं ?

(ग) चित्र में कौन-सी ताकत होती है ?

(घ) चित्रों के रंग किन्हें साकार करते हैं ?

सदैव ध्यान में रखो

शब्दों की अपेक्षा चित्र गहरा असर डालते हैं ।

भाषा की ओर

नीचे दिए हुए वाक्य पढ़ो और मोटे टाईपवाले शब्दों की तरफ ध्यान दो :

(१) अनय उत्तम **तैराक** है ।

(२) मेहल **हँसोड़** लड़की है ।

(३) वृक्ष की **कटाई** पर रोक लगाई है ।

(४) इस गाँव के लोग **झगड़ालू** नहीं हैं ।

तैराक, हँसोड़, कटाई, झगड़ालू इन शब्दों में मूल शब्द तैरना, हँसना, काटना, झगड़ना ये क्रियाएँ हैं । मोटे टाइपवाले शब्द क्रिया में प्रत्यय लगाने पर बने हैं । अतः ये '**कृदंत**' हैं ।

(१) **राष्ट्रीय** एकता को बनाएँ रखें ।

(२) देशवासियों में **अपनत्व** का भाव है ।

(३) भारत के **प्राकृतिक** दृश्य अवर्णनीय हैं ।

(४) हिमालय की **ऊँचाई** देखते ही बनती है ।

राष्ट्रीय, अपनत्व, प्राकृतिक, ऊँचाई इन शब्दों में मूल शब्द राष्ट्र, अपना, प्रकृति, ऊँचा हैं । इनमें राष्ट्र (संज्ञा), अपना (सर्वनाम), प्रकृति (संज्ञा) और ऊँचा (विशेषण) है । ये शब्द संज्ञा, सर्वनाम, विशेषणों में प्रत्यय लगाने पर बने हैं । अतः ये '**तद्‌धित**' हैं ।

✲ निम्न गद्‌यांश को पढ़कर तद्‌धित तथा कृदंत प्रत्यय छाँटो तथा उसका विग्रह करके तालिका में लिखो-
एक लकड़हारा था । वह एक दिन लकड़ियाँ बेचने हाट की ओर जंगल के रास्ते निकला । रास्ता पथरीला, कँटीला, टेढ़ा-मेढ़ा और डरावना था । वह दोपहर में थकान के कारण सो गया । कुछ समय के बाद आगे बढ़ा । वह जब जंगल से गुजर रहा था तो कुछ डाकुओं ने उसे घेर लिया और धमकी दी । वह बोला-''मैं कोई धनवान नहीं हूँ, अपनी कमाई से पेट पालता हूँ ।'' यह सुनकर डाकू वहाँ से चल पड़े ।

क्र.	शब्द	तद्‌धित		शब्द	कृदंत	
		मूल शब्द	प्रत्यय		मूल शब्द	प्रत्यय
१.	लकड़हारा	लकड़ी	हारा	थकान	थकना	आन
२.						
३.						
४.						

● **सुनो, समझो और सुनाओ :**

९. एक सैर ऐसी भी

इस संवाद में लेखक ने बड़ों के आदेश, नियमों के पालन, अनुशासन एवं देशप्रेम की भावना को बढ़ावा दिया है ।

स्वयं अध्ययन

स्थान, समय, दिन, दिनांक, शुल्क आदि से संबंधित अपनी शालेय सैर का सूचना पत्र बनाओ ।

(क्रिसमस का अवकाश था । जॉन, अच्युत, अर्चना, विप्लव, प्राची, तबस्सुम, इब्राहिम सभी लावण्या के घर इकट्‌ठा होकर आपस में बातचीत कर रहे हैं ।)

जॉन : मित्रो ! छुट्‌टियाँ चल रही हैं । विद्‌यालय में 'अपनी सैर' पर दस से पंद्रह वाक्य लिखने के लिए कहा गया है । चलो, आज ही नदी में नाव की सैर करके आते हैं । शुभ कार्य में देरी क्यों ?

अर्चना : नदी तो यहाँ से दूर है । बस से जाना पड़ेगा ।

विप्लव : वहाँ आने-जाने में पूरा दिन लग जाएगा ।

अच्युत : इतने पैसे भी अपने पास नहीं हैं । खाना भी नहीं खाया है । भूखे भजन न होंहि गोपाला ।

प्राची : घरवालों से बिना पूछे इतनी दूर जाना उचित नहीं है ।

इब्राहिम : साथ में कोई बड़ा भी तो होना चाहिए ।

जॉन : मार्था आंटी घर पर ही हैं । उनको साथ ले सकते हैं । वही हमारी नायक होंगी ।

लावण्या : तुम्हारी बात ठीक है । तुम अपनी आंटी को कल के लिए तैयार करो । आवश्यक खर्च के लिए पैसे एवं खाने-पीने के सामान लेकर कल प्रातः आठ बजे एस.टी. स्टैंड पर सभी मिलेंगे ।

(सभी अपने-अपने घर जाते हैं । सूचनानुसार तैयारी के साथ दूसरे दिन बस स्थानक पर सभी एकत्रित होते हैं । बस आते ही सभी बच्चे दौड़ पड़ते हैं ।)

❑ संवाद का मुखर एवं मौन वाचन कराएँ । प्रश्नोत्तर एवं चर्चा के माध्यम से संवाद के प्रमुख मुद्‌दे स्पष्ट करें । संवाद का नाट्‌यीकरण कक्षा में कराएँ । किसी सैर पर जाने के पूर्व क्या-क्या तैयारी करनी चाहिए, सूची बनवाएँ । राष्ट्रीय संपत्ति की सूची बनवाएँ ।

सुनो तो जरा

किसी हस्तकला प्रदर्शनी का निरीक्षण करो तथा अपने अनुभव कक्षा में सुनाओ :

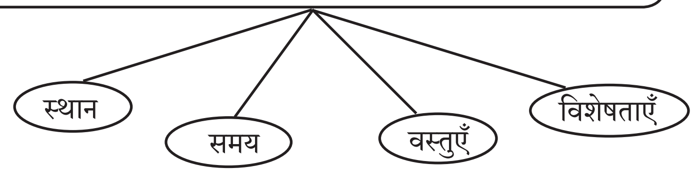

मार्था आंटी : रुको, सुनो सभी बच्चो !

लावण्या : क्या हुआ आंटी जी ? यही बस नदी तक जाएगी ।

जॉन : हम अंदर जाकर फटाफट सीट पकड़ते हैं ।

प्राची : जगह पकड़ने के लिए खिड़की से सीट पर अपना सामान रख देते हैं ।

मार्था आंटी : शांत हो जाओ सब ! विद्‌यालय में तुम लोगों को क्या यही सिखाया–पढ़ाया गया है ? पंक्तिबद्‌ध होकर बस में चढ़ो । उससे पहले वरिष्ठ नागरिकों और महिलाओं को चढ़ने दो ।

(सभी झेंप जाते हैं । महिलाओं और वृद्‌धों के चढ़ने के बाद बस में चढ़ते हैं । सभी बैठ जाते हैं । अच्युत को देखकर सभी खुसर–फुसर करते हैं फिर हँसने लगते हैं ।)

अच्युत : तुम सब मुझे देखकर हँस क्यों रहे हो ?

विप्लव : तुम जिस सीट पर बैठे हो वह 'महिलाओं के लिए आरक्षित' है ।

जॉन : अर्चना तो 'दिव्यांग के लिए आरक्षित' सीट पर बैठी है ।

मार्था आंटी : इसीलिए कहा गया है– 'जल्दी का काम शैतान का काम होता है' । सभी लोगों को पहले ही ध्यान देकर बैठना चाहिए । **(सभी उचित जगह पर बैठते हैं । कंडक्टर बस में प्रवेश करता है । जॉन जोश में आकर बस की घंटी बजाने की कोशिश करता है । जोर से खींचने के कारण रस्सी टूट जाती है ।)**

कंडक्टर चाचा: तुम्हें मालूम नहीं कि बस सार्वजनिक संपत्ति है ? हर सार्वजनिक संपत्ति राज्य/राष्ट्र की संपत्ति है । इसे हानि पहुँचाना राष्ट्र को हानि पहुँचाना है ।

तबस्सुम : हाँ ! मैंने रेलवे में भी इसी तरह लिखा हुआ पढ़ा है ।

मार्था आंटी : केवल पढ़ने से कुछ नहीं होता । उनका पालन करना भी आवश्यक होता है । जॉन तुमने राष्ट्र की संपत्ति को नुकसान पहुँचाया है । चलो, कंडक्टर चाचा से क्षमा माँगो ।

(जॉन कंडक्टर चाचा से क्षमा माँगता है ।)

लावण्या : अब पछताए होत क्या जब चिड़िया चुग गई खेत ।

मार्था आंटी : कंडक्टर साहब ! जो नुकसान हुआ है, कृपया उसका पैसा मुझसे ले लीजिए ।

कंडक्टर चाचा: बच्चो ! इन्हीं छोटी–छोटी बातों से हम जीवन के आदर्श और राष्ट्र के प्रति अपनी जिम्मेदारी सीखते हैं । चलो अब सब अपना–अपना टिकट लो ।

(सभी टिकट लेते हैं । बड़े ही अनुशासित ढंग से नदी किनारे घूमते हैं । स्वच्छता का ध्यान रखते हैं । नाव में बैठकर नदी की सैर करते हैं । अँधेरा होने के पहले अपने–अपने घर वापस आ जाते हैं ।)

❑ संवाद में किन–किन बच्चों ने क्या ऐसा किया जो नहीं करना चाहिए था, एकल, गुट में बताने के लिए कहें । कंडक्टर चाचा ने मार्था आंटी से पैसे लिए होंगे या नहीं, चर्चा कराएँ । 'सार्वजनिक संपत्ति की सुरक्षा' पर बारह से पंद्रह वाक्य लिखने के लिए प्रेरित करें ।

मैंने समझा

विचार मंथन

।। स्वांतः सुखाय तुलसी रघुनाथ गाथा ।।

शब्द वाटिका

नया शब्द

दिव्यांग = विकलांग

मुहावरे

खुसर-फुसर करना = आपस में फुसफुसाकर बोलना

जल्दी का काम शैतान का = बिना सोचे विचारे काम करना

कहावतें

भूखे भजन न होंहि गोपाला = खाली पेट काम नहीं होता है

अब पछताए होत क्या जब चिड़िया चुग गई खेत = समय चूक जाने पर पश्चाताप निरर्थक होता है

जरा सोचो ...... बताओ

एक दिन के लिए यातायात के सभी साधन बंद रहें तो ...

अध्ययन कौशल

शालेय पर्यटन के लिए किसी पर्यटन स्थल की जानकारी अंतरजाल से प्राप्त करो ।

https//www.maharashtra.gov.in

बताओ तो सही

घर के बड़े हमें सलाह देते हैं, उनसे तुम कितने सहमत हो; बताओ ।

वाचन जगत से

रेल स्थानक और बस स्थानक पर लगे निर्देश, सूचना फलक पढ़ो और उनका पालन करो ।

मेरी कलम से

संवाद लिखो ।

- पॉलीथिन और कपड़े की थैली
- नारियल और आम का वृक्ष

खोजबीन

अपने तहसील/जिले की 'बाँध परियोजना' संबंधी जानकारी प्राप्त करो और टिप्पणी लिखो ।

※ पाठ के आधार पर कारण लिखो :

(क) बच्चे सैर पर जाना चाहते थे ।
(ख) घरवालों की इजाजत लेनी पड़ी ।
(ग) बच्चों ने मार्था आंटी को साथ में लेना चाहा ।
(घ) मार्था आंटी ने बच्चों को डाँटा ।
(च) जॉन ने कंडक्टर चाचा से क्षमा माँगी ।
(छ) अच्युत को देखकर बच्चे हँस रहे थे ।

सदैव ध्यान में रखो

स्वच्छता में स्वास्थ्य निहित है ।

भाषा की ओर

तत्सम, तद्‌भव, देशज, विदेशी, संकर शब्द पढ़ो और शब्दों के स्रोत समझो :
अ.= अरबी, अं. = अंग्रेजी, पु. = पुर्तगाली, फ्रां. = फ्रांसीसी, ची. = चीनी, जा. = जापानी

संस्कृत → हिंदी

संस्कृत	हिंदी
पुस्तक	पुस्तक
कन्या	कन्या
अहंकार	अहंकार
राजा	राजा
नित्य	नित्य

※ संस्कृत से सीधा चला आता हूँ ।
हिंदी में ज्यों का त्यों लिखा जाता हूँ ।
मैं हूँ **'तत्सम'** शब्द ....

संस्कृत	हिंदी
हस्त	हाथ
कपाट	किवाड़
क्षेत्र	खेत
पुत्र	पूत
दीप	दीया

※ संस्कृत से चला आता हूँ ।
हिंदी में परिवर्तित होकर लिखा जाता हूँ ।
मैं हूँ **'तद्‌भव'** शब्द ....

ग्राम्य क्षेत्र बोलियाँ	हिंदी
झाड़ू	झाड़ू
दमड़ी	दमड़ी
ठेठ	ठेठ
चीकट	चीकट
निस	निस

※ ग्राम्यक्षेत्र से है मेरा नाता ।
देशी भाषाओं से चला आता ।
मैं हूँ **'देशज'** शब्द ....

विदेशी भाषा	हिंदी
बाजार(फा.)	बाजार
राशन (अं.)	राशन
साबुन (पु.)	साबुन
काजू (फ्रां.)	काजू
चाय (ची.)	चाय

※ अरबी, अंग्रेजी, फारसी आदि से हाथ मिलाता हूँ ।
हिंदी में प्रचलित होकर चला आता हूँ ।
मैं हूँ **'विदेशी'** शब्द ....

भिन्न भाषा	हिंदी
किताब(अ.)+घर (हिं.)	किताबघर
रेल (अं.)+यात्री(सं.)	रेलयात्री
माल (अ.)+गोदाम (अं.)	मालगोदाम
बीमा (अ.)+पॉलिसी (अं.)	बीमापॉलिसी
बस (अं.)+ चालक (हिं.)	बसचालक

※ दो भिन्न भाषाओं से मेल खाता हूँ । हिंदी में नए शब्द के रूप में चला आता हूँ ।
मैं हूँ **'संकर'** शब्द ....

● **पढ़ो और गाओ :**

१०. (अ) दो गजलें

–डॉ. कुँअर बेचैन

जन्म : १ जुलाई १९४२, मुरादाबाद (उ.प्र.) **रचनाएँ :** शामियाने काँच के, धूपचली मीलों तक, शब्द एक लालटेन, पर्स पर तितली, मरकत द्वीप की नीलमणि आदि **परिचय :** कुँअर जी विविध सम्मान-पुरस्कारों से पुरस्कृत तथा गजलकारों में प्रमुख हस्ताक्षर हैं ।
प्रस्तुत गजलों में बेचैन जी ने बेटियों के महत्व और जिंदगी जीने के तरीके को बड़े ही मार्मिक एवं सुंदर ढंग से दर्शाया है ।

बेटियाँ

हैं ये पूजाघर का आँगन बेटियाँ
हैं ऋचाओं जैसी पावन बेटियाँ ।

अब तो सारी दुनिया ही कहने लगी
जग की दौलत से बड़ा धन बेटियाँ ।

सामने आईं तो याद आ जाएगा
हैं बड़े-बूढ़ों का बचपन बेटियाँ ।

दो घरों की छबि बनाने के लिए
दो घरों की एक दर्पन बेटियाँ ।

अपनी मेहनत से, बना लेती हैं ये
एक जंगल को भी उपवन बेटियाँ ।

खुश्क रेगिस्तान-सी है जिंदगी
और रिमझिम मस्त सावन बेटियाँ ।

जन्म से ही साथ लाती हैं 'कुँअर'
फूल-सा तन, मोम-सा मन बेटियाँ ।

असर

जिंदगी की राहों में, खुशबुओं के घर रखना
आँख में नई मंजिल, पाँव में सफर रखना ।

सिर्फ छाँव में रहकर फूल भी नहीं खिलते
चाँदनी से मिल कर भी, धूप की खबर रखना ।

दाग सिर्फ औरों के, देखने से क्या हासिल
अपना आईना है तू, खुद पे भी नजर रखना ।

लोग जन्म लेते ही, पंख काट देते हैं
है बहुत-बहुत मुश्किल, बाजुओं में खम रखना ।

ये न हो कि तेरे ये, शब्द अर्थ खो बैठें
ऐ 'कुँअर' तू सच कहकर, बात में असर रखना ।

❑ उचित हाव-भाव, लय-ताल के साथ उपरोक्त गजलों का गायन करें । विद्यार्थियों से सामूहिक, गुट में अनुकरण गायन कराएँ । प्रश्नोत्तर एवं चर्चा के माध्यम से गजलों के भाव स्पष्ट करें । विद्यार्थियों को कोई गजल गाने के लिए प्रेरित करें ।

● **पढ़ो और समझो :**

(ब) एक मटका बुद्धि

इस कहानी में कहानीकार ने बुद्धिबल एवं चतुराई के महत्व को स्थापित करने का प्रयास किया है ।

बादशाह अकबर ने अपने दरबार में कुछ प्रतिभाशाली और बुद्धिमान लोगों को नियुक्त किया था, जो 'नवरत्न' अर्थात नौ रत्नों के नाम से जाने जाते थे । इन सबमें बहुमूल्य रत्न थे बीरबल, जो एक हाजिर जवाब मंत्री थे । एक बार श्रीलंका के राजा, बादशाह अकबर के दरबारियों की बुद्धि की परीक्षा लेना चाहते थे, इसलिए उन्होंने अपना दूत इस विशेष कार्य के लिए अकबर के दरबार में भेजा ।

''हे महान राजा! श्रीलंका के राजा ने अपनी शुभकामनाएँ भेजी हैं । उन्होंने आपके सम्मान तथा स्नेह के प्रतीक बहुमूल्य उपहार भेजा है । बादशाह सलामत, मैं यहाँ एक विशेष अनुरोध लेकर आया हूँ,'' दूत ने कहा । ''आपका दरबार सर्वश्रेष्ठ बुद्धिवाले दरबारियों के कारण प्रसिद्ध है । श्रीलंका के राजा ने अनुरोध किया है कि आप इस बुद्धिमत्ता का छोटा-सा अंश हमें भी दे दें । वे चाहते हैं कि 'एक मटका बुद्धि' उनके लिए भेज दें ।'' दूत ने निवेदन किया ।

इस प्रकार के अजीब अनुरोध के कारण दरबारी बहुत चिंतित हो गए । उन्होंने घबराकर एक-दूसरे की ओर देखा । ''हमने जो सुना है वह क्या ठीक है? एक मटका बुद्धि ?'' एक दरबारी ने गुस्से से कहा । ''यह अनुरोध तो बिलकुल बे-सिर-पैर का है ! श्रीलंका के राजा का दिमाग जरूर खराब हो गया है जो उन्होंने इस तरह का मूर्खतापूर्ण अनुरोध किया है ।'' सभी दरबारी उसके इस कथन से सहमत थे ।

''मुझे लगता है इस दरबार में एक बुद्धिमान व्यक्ति है जो कुछ-न-कुछ युक्ति अवश्य निकाल सकता है,'' एक मंत्री ने बीरबल की ओर देखते हुए कहा । वह दरबारी बीरबल से बहुत ईर्ष्या करता था । उसे लगा कि बीरबल को नीचा दिखाने का वह सही अवसर था । उधर राजदूत इस बात का खूब मजा ले रहा था कि उसने अकबर के दरबार में तनाव तथा गड़बड़ी की सृष्टि कर दी थी ।

बादशाह अकबर भी अपने अन्य दरबारियों की तरह इस अजीब अनुरोध से भौंचक्के रह गए । उन्होंने बीरबल से कहा, ''तुम्हारे पास सभी समस्याओं का हल होता है और मुझे आशा है कि तुम इस समस्या को भी सुलझा सकोगे ।'' बीरबल ने अकबर के सामने अपना सिर झुकाया और कहा, ''बादशाह सलामत, हमारे राज्य में काफी बुद्धि है और मुझे विश्वास है कि हम 'बुद्धि भरा मटका' श्रीलंका भिजवा ही देंगे ।'' दूत ने कहा, ''जैसे ही मुझे 'बुद्धि भरा मटका' मिल जाएगा मैं अपने देश के लिए प्रस्थान करूँगा ।''

''बादशाह सलामत 'बुद्धि भरा मटका' तैयार करने में थोड़ा समय लगेगा,'' बीरबल ने अकबर को बताया । दूत अपनी धूर्तता पर मुस्कराता हुआ बोला, ''अच्छी बात है, बादशाह सलामत, मैं इंतजार करूँगा । आपकी सूचना मिलने पर आऊँगा ।''

बीरबल घर वापस आए । उन्होंने अपने माली से खेत में कुछ कुम्हड़ों के बीज बोने को कहा । कुछ समय बाद वे बेलें बड़ी हो गईं और उनमें छोटे-छोटे फल आ गए । बीरबल उन फलों को देखकर बहुत खुश हुए और उन्होंने माली को बुलाया । उन्होंने माली को कुछ मटके दिए और कहा, ''हर मटके में एक कुम्हड़ा बढ़ जाए ऐसे एक-एक मटका लगा दो ।'' उन्होंने माली को विशेष निर्देश दिया कि बेलों की अच्छी तरह से देखभाल करे और कुम्हड़ों को मटकों के अंदर ही बढ़ने दे ।

कुछ सप्ताहों के बाद कुम्हड़े अपने पूरे बड़े आकार

❑ उचित आरोह-अवरोह के साथ किसी परिच्छेद का आदर्श वाचन कराएँ । विद्यार्थियों को कहानी के अंत का अनुमान लगाते हुए मुखर एवं मौन वाचन करने के लिए कहें । इस कहानी में आए निवेदन, प्रश्न और आदेशवाले वाक्य अलग करके लिखवाएँ ।

के हो गए और उनसे मटके पूरी तरह से भर गए थे । बीरबल ने बहुत सावधानी से कुम्हड़ों को मटकों सहित पौधों से अलग कर दिया । उन्होंने बादशाह अकबर को खबर भिजवाई कि 'बुद्‌धि भरा मटका' तैयार है । अगले दिन बादशाह अकबर ने श्रीलंका के राजदूत को राजदरबार में बुलवाया ।

श्रीलंका के राजदूत को विश्वास था कि बीरबल 'बुद्‌धि भरा मटका' तैयार करने में सफल नहीं हो सके होंगे । जब सब लोग दरबार में उपस्थित हो गए तो बादशाह अकबर ने कहा, ''बीरबल, राजदूत के लिए 'बुद्‌धि भरा मटका' लाओ ।'' बीरबल ने अपने सेवक को मटका लाने का इशारा किया । मटके को एक तश्तरी पर रखा गया था तथा एक सुंदर कपड़े से ढँककर लाया गया था । दरबार में चुप्पी छाई थी क्योंकि किसी को विश्वास नहीं हुआ कि राज्य में 'बुद्‌धि भरा मटका' नाम की कोई चीज भी थी ।

बीरबल बोले, ''बादशाह सलामत, श्रीलंका के राजा द्‌वारा की गई फरमाइश यानि 'बुद्‌धि भरा मटका' हाजिर है । क्या इस मटके से संबंधित एक आवश्यक बात मैं अपने माननीय अतिथि को बता सकता हूँ ?''

''हाँ जरूर, बीरबल,'' बादशाह ने कहा।

राजदूत की ओर देखकर बीरबल बोले, ''इस मटके में 'बुद्‌धि का फल' रखा है । यह फल मटके को तोड़े बिना या फल को काटे बिना बाहर निकालना होगा। 'बुद्‌धि का फल' निकालने के बाद आप यह मटका हमें वापस कर दें । लेकिन उसपर एक खरोंच भी नहीं लगनी चाहिए ।''

राजदूत ने कपड़ा हटाकर अंदर झाँककर देखा । मटके में एक बड़ा-सा कुम्हड़ा था । उस छोटे-से मुँहवाले मटके में कुम्हड़ा कैसे रखा गया ! और वह उस कुम्हड़े को मटके को तोड़े बिना या उसे काटे बिना बाहर कैसे निकालेगा ? राजदूत के पास कहने को शब्द नहीं थे । वह बीरबल की चतुराई से हार मान चुका था । उसने सम्मान पूर्वक बादशाह अकबर को सलाम किया और कहा, ''आपके इस उपहार ने मुझे कृतार्थ कर दिया । आपका राज्य बुद्‌धिमान लोगों से परिपूर्ण है और बीरबल उन सबमें अधिक बुद्‌धिमान हैं ।'' इन शब्दों के साथ राजदूत ने अपना 'बुद्‌धि भरा मटका' लेकर दरबार से विदा ली और श्रीलंका वापस चला गया ।

अब अकबर तथा उनके दरबारी सभी जानने को उत्सुक थे कि मटके में क्या था । बीरबल ने बाकी मटके दरबार में लाने का आदेश दिया और बादशाह अकबर तथा दरबारियों के सामने मटके पेश किए गए ।

जब बादशाह ने मटके के भीतर झाँककर देखा तो वे हँसते-हँसते लोटपोट हो गए । बादशाह बीरबल की बुद्‌धिमानी से बहुत प्रसन्न हुए और उन्हें बहुत से मूल्यवान उपहार दिए ।

❑ इस कहानी का कक्षा में नाट्‌यीकरण कराएँ । विद्‌यार्थियों को अपनी बुद्‌धिमानीवाले कोई कार्य बताने के लिए प्रेरित करें । तेनालीराम की कहानियाँ पढ़ने के लिए प्रोत्साहित करें । विद्‌यार्थियों से पूछें कि वे बीरबल की सूचनानुसार कुम्हड़ा कैसे बाहर निकालेंगे ?